तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : १० वर्ष : १८ १५-३१ मई १९८२
दीवाना
अन्दर पढ़िये
आस्ट्रोटर्फ
प्लास्टिक युग
सिलबिल-पिलपिल
के नये कारनामे
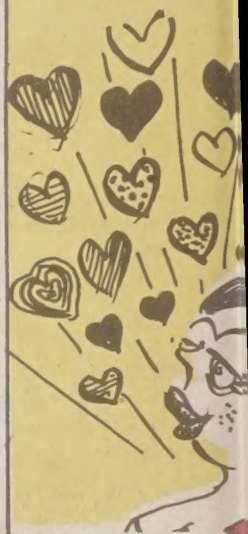
आज कृषि दर्शन के हमारे कार्यक्रम में डाक्टर चुकन्दर मल जी पधारे हैं। यह आपको तोरई जाति की सब्जियों के बारे में जानकारी दे डाक्टर साहब तोरई जाति की जो सब्जियां हैं उनके में बारे बताइये

यह आपने बहुत अच्छा सवाल पूछा! आज कल मौसम तोरई, कद्दू, लौकी वगैरह लगाने का है जो बेल वाली सब्जियां हैं। उन्हें लगाने के लिये पहले मिट्टी खोदो

और फिर उस मिट्टी में लल्लू को सिरके का लेप करके दस फुट नीचे गाढ़ दो।

डायमण्ड कॉमिक्स में

बिल्लू - 3

जी हाँ अब 'पराग' की सुप्रसिद्ध सीरीज बिल्लू डायमण्ड कामिक्स में

चाचा चौधरी, मामा भांजा, फौलादीसिंह, चाचा भतीजा और राजन इकबाल सीरीज की अपार सफलता के बाद अब हम प्रस्तुत कर रहे हैं सुप्रसिद्ध कार्टूनिस्ट प्राण की रोचक

बिल्लू सीरीज बिल्लू के साथ आ रहे है, बिल्लू के सभी जाने-पहचाने मजेदार साथी गब्दू, तोशी, गोबर गणेश, बजरंगी पहलवान, ताऊ जी और ताई जी। बिल्लू के विचित्र कारनामे नन्हे-मुन्ने पाठकों को जहां हंसा-हंसा कर लोटपोट कर देंगे, वहीं उन्हें बौद्धिक स्तर पर ऊंचा उठाऐंगे।

बिल्लू – १ बिल्लू – 2 प्रकाशित हो चुकी हैं।

रोमांच साहसिक
ई कारनामों से भरपूर

ऊ जी
र लालची
दूगर
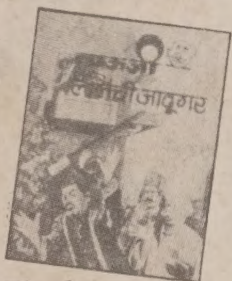
मू. 3/-

जादुई कारनामों से भरपूर बलशाली फौलादी सिंह और महान वैज्ञानिक डा० जान के वैज्ञानिक करिश्में

फौलादी सिंह और अन्तरिक्ष में तबाही
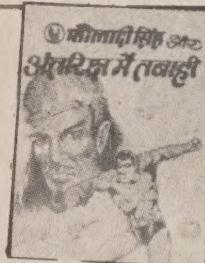
मू. 3/-

गुरुओं की
जीवनियाँ ——
ुरुओं को सचित्र जीवनी
क पाँच रंगे आवरण में

प्रियदर्शी प्रकाश
नक देव
गद देव
मर दास
न दास
र्जुन देव
गोविन्द
रे राय
कृष्ण
बहादुर
विन्द सिह

येक मूल्य 2.00

डायमंड बाल पाकेट बुक्स में रहस्य, रोमांच साहसिक जासूसी व जादुई कारनामों से भरपूर रोचक पुस्तकें ——

लम्बू मोटू पिशाच का आंतक	2.00
चाचा भतीजा और लंगड़ा राक्षस	2.00
फौलादी सिंह और ज्यूपिटर की तबाही	2.00
चाचा चौधरी और खूनी दरिन्दे	2.00
चाचा भतीजा और तिलस्मी फन्दा	2.00
चाचा भतीजा और दानवों से टक्कर	2.00
चाचा चौधरी और जादूगरों का देश	2.00
लम्बू मोटू और कत्ल पर कत्ल	2.00
टार्जन का खूनी खेल	2.00
फैण्टम और सुप्रीमों	2.00
फैण्टम और जंगल का प्रेत	2.00
फैण्टम और पिशाच	2.00
फैण्टम और सुनहरी पर्वत	2.00
फेन्टम और जंगल का खजाना	2.00
चाचा चौधरी और लाशों के चोर	2.00
चाचा चौधरी गद्दारों की बस्ती में	2.00

नये डायमण्ड कामिक्स ——

चाचा चौधरी और बोतल का जिन्न	3.00
लम्बू मोटू की ड्राकुला से टक्कर	3.00
चाचा चौधरी और अकबरी खजाना	3.00
फौलादीसिह और खतरनाक षडयंत्र	3.00
फौलादीसिंह और अन्तरिक्ष के डाकू	3.00
राजन इकबाल और इन्टरनैशनल गेंग	3.00
राजन इकबाल की मौत से टक्कर	3.00
मामा भांजा और ईमानदार चोर	3.00
चाचा भतीजा और तिलस्मी समुद्र	3.00

बच्चों की अनूठी मासिक पत्रिका

अंकुर

मू. 2/50

आर्डर के साथ आधा मूल्य एडवाँस मनीआर्डर से भेजे। डाक व्यय अलग।

डायमण्ड कॉमिक्स

2715 दरिया गंज,
नई दिल्ली-110[illegible]

दिल हल्का करने वाली

अच्छी खबर यह है कि

मैंने अपने मंगेतर को अपनी पिछली सारी बातें साफ-साफ बता दी हैं.

अब रौंगटे खड़े करने वाली खबर यह है कि

मेरी पिछली कहानियां सुन उसका रंग उड़ गया और वह इस तरह भागा कि पीछे मुड़ कर नहीं देखा।
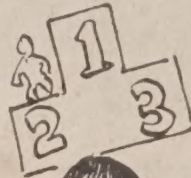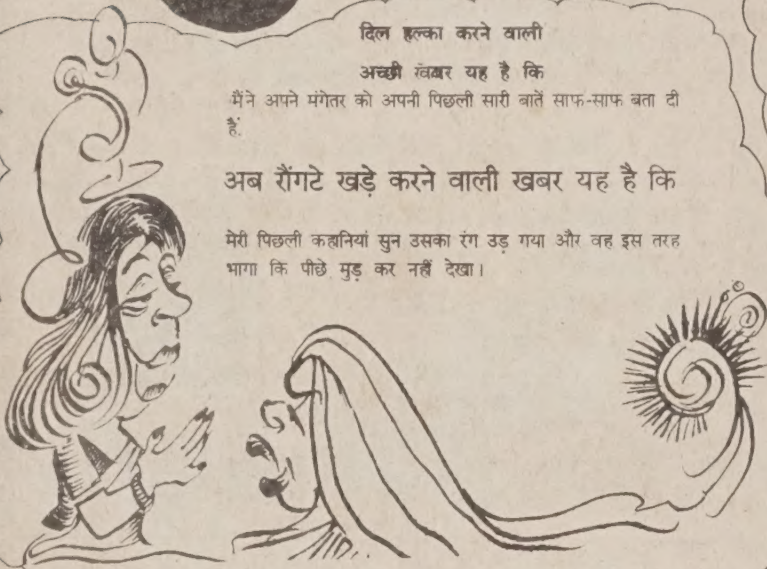
अच्छे नम्बरों वाली खबर यह है कि

मैं अपनी कक्षा में द्वितीय आया हूं।

नम्बर कम करने वाली खबर यह है कि

हमारी कक्षा में केवल दो ही विद्यार्थी थे।

रोमान्टिक खबर यह है कि

दिल्ली से शिमला तक रेलवे कूपे में मेरे साथ एक हसीन लड़की सफर कर रही थी, कूपे में केवल हम दो ही थे।

रोमान्टिक मूड खराब करने वाली खबर यह है कि

मैं स्वयं भी एक लड़की हूं।
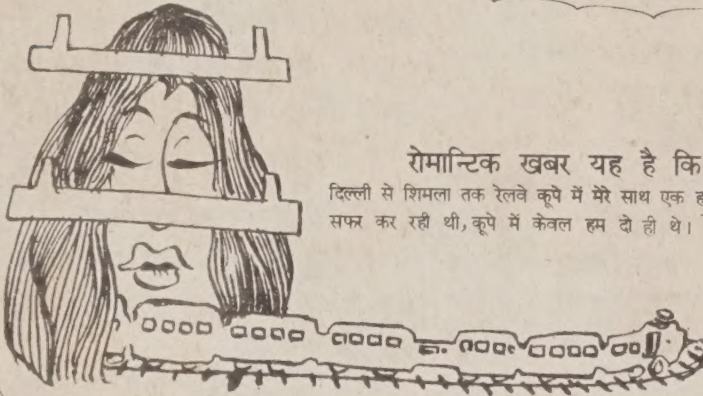
अच्छी खबर यह है कि

मेरी मंगेतर बहुत अच्छी डिस्को डांसर है।

बुरी खबर यह है कि

उसमें कामनसैंस बिल्कुल नहीं है। उसकी जिद है ... अग्नि के चारों ओर फेरे डिस्को डांसिंग करते हुए लगायेंगे। हमारी शादी का मजाक बना देगी।

अपने ही घर की अच्छी खबर यह है

मुझे कॉलेज में एडमिशन मिलने में दिक्कत नहीं होगी। मेरे जीजाजी यूनिवर्सिटी में ऊंचे पद पर हैं।

दिल तोड़ने वाली खबर यह है कि

मेरे डैडी कारपोरेशन में काम करते हैं पिछले महीने जीजा जी को मकान बनाने के लिये सीमेंट की जरूरत पड़ी तो डैडी ने कोटा पास करवाने के लिये उनसे पांच सौ रुपये घूस लिया था।

ADMISSIONS OPEN
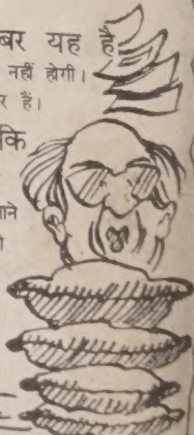
आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेषः व्यय यथार्थ, आय उत्तम, यात्रा में सुख, सफलता मिलती रहेगी, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी, घरेलू समस्याएं पैदा होंगी और खर्चा बढ़ेगा, सुस्ती छाएगी या सेहत खराब होगी. दिन अच्छे हैं,

वृषः लाभ खर्च बराबर, सुख सुविधाओं पर खर्च होगा, धर्म कर्म में रुचि, यात्रा में हानि का भय है, दिन अनुकूल होंगे, आय में वृद्धि, व्यय कुछ कम, काम समय पर पूरे हो जाएगें, परेशानी बढ़ेगी.

मिथुनः दौड़धूप ज्यादा पर सफलता कम, काम देर से बनेंगे, लाभ खर्च बराबर, यात्रा के लिए दिन ठीक हैं, आय में वृद्धि, परिश्रम द्वारा काम बनेंगे, लाभ एवं उत्साह बढ़ेगा, बिगडे काम बनेंगे.

कर्कः चलते कामों में अड़चन या देर से पूरे हाग, सेहत खराब, परिवार से सहयोग, परिश्रम अधिक, यात्रा आसपास की जो सफल रहेगी, व्यर्थ के वाद-विवाद से परेशानी होगी, मिले-जुले फल मिलेंगे.

सिंहः समय अनुकूल रहेगा, विरोधी मुंह की खाएंगें, व्यय बढ़ेगा, दिन ठीक नहीं, सेहत बिगड़ सकती है, पेट या आखें में तकलीफ, परिश्रम व्यर्थ जाएगा फिर भी कुछ काम पूरे हो जाएंगें, यात्रा में सुख, हालत सुधरेगी.

कन्याः व्यय यथार्थ, यात्रा में परेशानी, मन उदास रहेगा, भाई-मित्रों से सहयोग, शत्रु पर विजय, साहस बढ़ेगा, कारोबार से लाभ अच्छा, राजकीय कामों में सफलता प्रसन्नता होगी, सेहत को संभाले रखें.

तुलाः कामों में सफलता मिलती रहेगी,यात्रा सफल, रुका पैसा मिलेगी,आय में वृद्धि, व्यय बढ़ेगा, नई-नई योजनाएं सामने आएंगी, विरोधी अकारण ही पैदा होंगे,पुराने मित्रों से मेल-जोल, कारोबार में सुधार होगा.

वृश्चिकः बिगड़े काम बनेंगे, व्यापार सुधरेगा, सुख साधनों पर खर्च, सुस्ती का प्रभाव रहेगा, आय में वृद्धि पर व्यय भी कम न होगा, घरेलू झंझटों से परेशानी, यात्रा लाभप्रद होगी, व्यर्थ के कामों में समय खराब,

धनुः हालात ठीक रहेंगे, शुभ कामों में रुचि, कामों में सफलता और लाभ भी बढ़ेगा, यात्रा में सुख, बिगड़े काम बनते नज़र आएंगी, आर्थिक दशा में दृढ़ता आएगी, कारोबार में उन्नति, नए काम से लाभ,

मकरः यात्रा में कष्ट, काम समय पर न बनने से मन उदास रहेगा, खर्चा बढ़ेगा, भाग्य साथ देगा और वातावरण भी सुधरेगा, कुछ अधूरे काम बनेंगे, लाभ अच्छा होगा, लाभ खर्च बरारबर,

कुम्भः कोई शुभ सन्देश या किसी एक प्रिय नातेदार से मुलाकात होगी, मनोरंजन पर खर्च, काम बनेंगें, स्त्री पक्ष में दिलचस्पी, मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी, यात्रा सफल, घरेलू हालात भी ठीक चलेंगें।

मीनः शत्रु से हानि का भय है ऋण आदि की चिन्ता, अफसर आपसे प्रसन्न रहेंगे, अच्छे लोगों से मेल मिलाप, काम बनते रहेंगे. कठिनाईयां भी दूर होंगी, यात्रा में सुख, [illegible] सहायता मिलती रहेगी.

इस बार अंक सात की उम्मीद ही नहीं थी. और न ही मिला, मगर अपने दोस्त वेद प्रकाश अमित के घर से अचानक मिल गया. पूरा पखवाड़ा बीत चुका था. मगर अन्दर के पृष्ठ इस कदर ताजा थे जैसे अभी प्रेस से निकल कर आए हों. लल्लू,लल्ला की लव स्टोरी, राजा जी, और नामी चोर के साथ सवाल यह है का यह एक बेहद खूब सूरत अंक था. सम्पादक जी, कृपया आप टाइम पर अंक निकाला करो वरना हम जैसे पाठक इस से वंचित रह जाते है.एक बार तो मैं समझा कि आप अप्रैल फूल बना गये। इन्तजार में—

—राज पाल 'मिठुन' घोण्डा, शाहदरा, दिल्ली

दीवाना के अंक ७ में मोटू पतलू के कालचक्रों का नया धमाका बड़ा रोचक था। शिशिर विक्रांत की हास्य कथा 'नरक कुंड' विशेष उल्लेखनीय रही। वास्तव में आजकल बाजार में सब्जी खरीदने जाना खामखां मुसीबत मोल लेना है. शिशिर विक्रांत ने इस तथ्य को हास्य रचना का रूप देते हुए बहुत दूर की सोचकर रचना तैयार की है।

चूंकि पत्रिका में नामीचोर ने बहुत दिनों बाद कदम रखा है फिर भी दिल में अपने शैतानीपने कार्य की अमिट छाप छोड़ने में कोई कसर बाकी नहीं रखी।

'क्यों और कैसे' में पाठशालाओं के शुरू होने के आदिअन्त, विवरण को आपने देकर विशेष कार्य किया है, जो प्रशंसा के योग्य है।

दीवाना में मुफ्त पोस्टर एवं फिल्म फीचर का अभाव खटकता है. आशा है,आप इस ओर ध्यान देंगे।

—बीरबल प्रकाश मेहर
—मिढ्ढमुडा रायगढ (म. प्र.)

दीवाना का अंक सात मुस्कराता हुआ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर चिल्ली का कारनामा देखकर हैरान होना स्वभाविक था। अन्दर के पृष्ठों में लल्लू, राजाजी, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल पढ़कर आंखों में खुशी के आंसू आ गये। इस अंक की सबसे बड़ी उपलब्धि ''साढ़े बीस सूत्री हास्य-कार्यक्रम'' लगा। निश्चित ही प्रधान मन्त्री के बीस सूत्री कार्यक्रम से मुकाबला खाता है।

—परमजीत सुलैच ''पम्मी' करनाल

दीवाना का नया अंक ७ मिला, काफी रोचक रहा। इस बार राजा जी और सिल-बिल-पिलपिल काफी रोचक रहा और 'मोटू-पतलू काफी रोचक रहे हैं। शिव रैना द्वारा लिखित लघु कथा (बाराती) काफी रोचक रही (धन्यवाद)।

—कृष्ण लाल दुआ, जीन्द

'दीवाना' वर्ष ८२ का अंक ७ बड़े चाव लगाव से पढ़ा। चाचा जी द्वारा पत्रों के प्रश्नों के उत्तर एकदम सटीक थे। शिशिर विक्रांत द्वारा लिखित नरक कुंड,मोटू-पतलू व ले प्रेम नाथ द्वारा 'चीखती घडी का रहस्य भाग-४ बेहद पंसद आया। लल्ला की लव स्टोरी भी रोचक लगी। हर तरफ से दीवाना एक आकर्षक पत्रिका है। इसके लिए शुभ कामनाएं।

शिव रैना की व्यंग लघु कथा बाराती व साढ़े बीस सूत्री हास्य कार्यक्रम बेहद पसन्द आये।

—अशोक मारकन्डे दिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

खेल जगत में चिल्ली नें
जब खूब नाम कमाया
कैसा उसको दें पदक
कुछ समझ न आया।
एक नमूना तुम देखो
ओ! निणर्य करजाओ
अक्ल लगाओ थोडी सी
कोई पदक सुझाओ॥

अंक : १०   वर्ष : १८   १५-३१ मई १९८२

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

(हास्य कहानी)

चक्कर बुरा नकल का

शिशिर विक्रांत

भरपूर मनोरंजन का खजाना हैं, अनोखे लाल जी.'जैसा नाम, वैसे ही काम' वाली कहावत उनके ऊपर सवा सोलह आने खरी उतरती है. हर बात लाजवाब, हर काम अनोखा होता है उनका. जिसका भी उनसे वास्ता पड़ता है, हंसते-हंसते गैस भरा गुब्बारा हो जाता है.

कंघी से विशेष लगाव है अनोखे लाल जी को, यह बात दूसरी है कि उनके सफाचट सिर पर बाल का नामोनिशान भी नहीं है. हां, दाढ़ी ज़रूर फुट भर से कम क्या होगी. बस, हमेशा अपनी आवारा दाढ़ी पर कंघी फिराया करते हैं. वजह पूछने पर सदाबहार मुस्कान छोड़ते हुए कहते हैं. ''बस, जरा अपना शौक पूरा कर रहे हैं. आजकल के फुट भर लड़कों से लेकर नवयुवकों तक को टाइम गुजारने का यह अच्छा काम मिला हुआ है. बाल बढ़ा लो, और फिर संवारते रहो कंघी से खाली वक्त में ....अब हमारे सिर के बाल तो हमसे बेवफाई करके विदा हो गए. यही दाढ़ी है, सो इसी से मन बहलाया करते हैं. और फिर हम किसी बाल वाले से कम हैं क्या ....?''

सामने वाला चुप. बोले तो क्या बोले? अनोखे लाल जी की बात ही उसे ठीक जंचती है. पर मन ही मन मुस्कराए बिना भी रहा नहीं जाता, उससे.

बालों के इसी मसले को लेकर एक बार ऐसी घटना घटी अनोखे लाल जी के साथ कि उसे वे कभी भुला नहीं सकते.

हुआ यों कि उनके एक पुराने लंगोटिया यार दिल्ली से वहां आए. बातों बातों में ही बालों को लेकर बात चल निकली. अनोखे लाल जी के मुंह से उनके शौक के बारे में सुना तो दोस्त साहब उन्हें तरकीब सुझाते हुए बोले, ''अरे तो इसमें दिल छोटा करने की क्या जरूरत है? सिर के बालों का शौक, दाढ़ी के बालों से पूरा क्यों करो? सिर, फिर से बालों से, भर सकता है तुम्हारा.''

''कैसी बेपेंदी की बात कर रहे हो?'' अनोखे लाल जी ने उनकी बात सुनकर अचरज और अविश्वास से कहा, '' बाल झड़ गए, सो झड़ गए हमारी इस कदर चिक्कन चांद पर अब बाल आ ही कैसे सकते हैं?''

''आ सकते हैं, जरूर आ सकते हैं.'' मित्र फुसफुसाते हुए बोले,'' तुम शायद यह भूल जाते हो कि यह विज्ञान का युग है. हर बात संभव है इसमें. थोड़ा खर्च करके 'विग' क्यों नहीं लगवा लेते ...?

''विग ...'' अनोखे लाल जी मुंह सिकोड़ते हुए बोले, ''यह किस पंछी का नाम होता है? शहर में मिलता है क्या?''

छोटे से कस्बें में ही बचपन से रहते आए अनोखे लाल जी ने, विग देखने की बात तो दूर, उसका नाम भी कभी नहीं सुना था. अचरज करना लाजिमी था ही, पर दोस्त की बातों से उनको कुछ आशा बंधने लगी.

''विग, यानी नकली बालों का सेट.''

''ना बाबा, ना.'' अनोखे लाल जी बिदके,'' नकली नहीं लगवाएंगे. पूरी जिंदगी बिता दी, पर नकली चीज का प्रयोग नहीं किया हमने, तो अब इस बुढ़ापे में भला नकली बाल लगवाएंगे ...?''

''अरे यार, घोड़े की तरह बिदको मत ...'' मित्र ने समझाया, ''असली से भी ज्यादा मजबूत, शानदार और सुंदर होते हैं वो नकली बाल. और बड़ी बात तो यह है कि जिस डिजाइन में चाहो, वैसे ही बाल बनवा लो. रंग भी मनमाफिक. बस, समझ लो कि बुढ़ापा जवानी में तबदील हो जाएगा. सोलह बरस के छोकरे लगोगे, हां ...''

आनोखे लाल जी को मित्र महोदय की तरकीब जंच गई. सारी पूछताछ करके उन्होंने दिल्ली जाकर, विग लगवाने का निश्चय कर ही लिया.

फिर कुछ दिनों बाद रुपयों का बंदोवस्त करके, एक रोज चल दिए घर से. घर वालों ने जाने का कारण पूछा तो बहाना बना दिया,'' तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं. फिकर मत करना. जल्दी ही लौटेंगे.''

अपना असली कारण वो किसी को बताना नहीं चाहते थे. सोचा, सबको 'सरप्राइज' देंगे. वैसे भी घर से प्रस्थान करते समय उनकी श्रद्धा देखकर, सहज ही अंदाज हो रहा था कि ये अवश्य ही तीर्थयात्रा को जा रहे हैं.

अनोखेलाल जी अपना ताम-झाम संभाल कर पहुंच गए दिल्ली. फिर ढूंढ़ते-ढांढ़ते बड़ी मुश्किलों के बाद एक विग बनाने वाली दुकान तक पहुंच सके. कारण, जिससे भी अपनी मकसद बताकर, पूछताछ करते, वही उनकी बात सुनकर हंसने लगता और उनका मजाक बनाने लगता. उनको इसमें अपना घोर अपमान महसूस हुआ, सो किसी से पूछे बगैर, खुद ही अपनी मंजिल तक गए.

एक बार तो उनकी उम्र और दांत साफ, झुर्रियों दार चेहरे को देखकर विग वाले से भी हंसे बिना न रहा गया, पर शौक के आगे उम्र भला क्या महत्व रखती है? और फिर, अनोखे लाल जी तो अनोखे ही ठहरे.

उनसे तगड़ी रकम ऐंठ कर विग वाले ने, उनकी पसंद के मुताबिक, उनके लिए हिप्पी कट बालों का एक विग तैयार कर दिया. अपनी चम-चम चांद पर विग को लगवा कर, जब अनोखे लाल जी ने खुद को शीशे में निहारा, तो बस निहारते ही रह गए. घंटा भर लगा, जवानी का जोश फिर से लौट आया हो. विग के ऊपर हाथ सहलाते हुए बड़बड़ाए, 'अनोखे लाल, अब तो तुम सचमुच ही अनोखे लाल बन गए.' खुशी के मारे छाती फूलकर दुगनी हो गई. घंटा भर में ही.

दिल्ली से मकसद पूरा करके, जब अनोखे लाल जी अपने कस्बे पहुंचे तो कस्बे वाले उनको आंखें चौड़ा चौड़ा कर अचरज से ताकने लगे.

''लगते तो शक्ल से अनोखे लाल ही हैं, पर इनके सिर पर दुबारा से फसल कैसे खड़ी हो गई ...?'' एक बड़बड़ाया तो दूसरा बोला, ''हां, सिर तो इनका बंजर हो चुका था एकदम. बाल आने की कल्पना भी नहीं की जा सकती.''

''अरे बाल आते भी तो क्या इतनी जल्दी आ जाते?'' तीसरे ने अपना शक जाहिर किया, कुछ दिनों पहले तो इनकी चांद एकदम सफाचट थी.''

''आप लोग भी जाने किस भ्रम में पड़े हैं ...'' चौथा भी बोल पड़ा,'' ये अनोखे लाल हैं ही नहीं. जरूर उनका कोई जुड़वां भाई है, या फिर उनका ही कोई हम शक्ल है. दुनिया में एक सी सूरत के क्या दो लोग नहीं हो सकते...?''

ऐसे ही बढ़ते-बढ़ते बात कई आदमियों में फैल गई. आधे लोग उनको अनोखे लाल ही मान रहे थे, जबकि बाकी के उन्हें अनोखे लाल मानने को हर्गिज राजी नहीं थे.

इधर अनोखेलाल जी मारे घमंड के रास्ता पार करते जा रहे थे. उनके लिए कोई क्या कह रहा है, उन्होंने इस पर ध्यान भी नहीं दिया.

वो तो लोगों को ज्यादा आश्चर्यचकित करने के लिए चेहरा भी इधर-उधर नहीं हिला डुला रहे थे कि कहीं अभी से भेद न खुल जाए.

शेष पृष्ठ 33 पर

SUBHKAMNAYE

शुभकामनाएं...
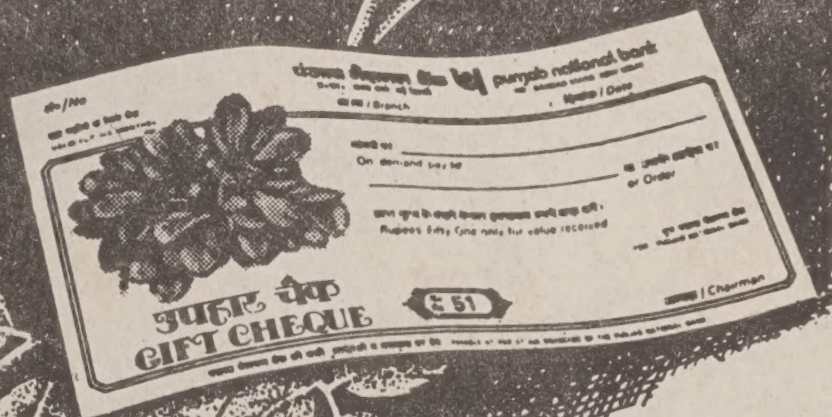
UPHAR

PNB/S/H

पीएनबी उपहार चैक के साथ

प्रायः लोग एक दूसरे को ऐसे उपहार देते हैं जिनकी उपहार पाने वाले को आवश्यकता नहीं होती। लेकिन आजकल किसी को भी मनचाहा उपहार देना आसान हो गया है यानि 11 रु:, 21 रु. 31 रु: 51 रु: तथा 101 रु: मूल्य के पी एन बी उपहार चैक जिन्हें हर कोई पसन्द करेगा।

उपहार चैक भेंट कीजिये अपने प्रिय जन को मन चाही वस्तु खरीदने (बिना अतिरिक्त खर्च के) का अवसर दीजिये

...जो आपके स्नेह के प्रतीक हैं

पंजाब नैशनल बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

...भरोसे का प्रतीक

PUNJAB NATIONAL BANK
Sec.-19.

मोटूपतलू

कुछ दिन पहले लाखों साल आगे से आये एक वैज्ञानिक की टाईम मशीन मोटू, पतलू और उन के साथियों के हाथ लग गई थी और उस में बैठ कर बेदों हजार साल पीछे के युग में पहुंच गये थे. जहां वे टाईम मशीन से बाहर निकले थे, वहां घने जंगल थे. वहां एक नरभक्षी पेड़ ने डाक्टर झटका को निगल लिया था और वह पेड़ के पेट में ऐसी जगह जा पहुंचा था, जहां एक बहुत बड़े कीडे का परिवार पल रहा था. डाक्टर झटका उस कीडे को इतना अच्छा लगा कि उसे खाने की बजाये वह उसे अपने बच्चों की तरह पालने लगा. इसके बाद मोटू-पतलू, चेलाराम और जूडो मास्टर तो चलते चलते बहुत आगे निकल गये और घसीटा राम एक ऐसी गुफा में जा पहुंचा जहां हीरों का बहुत बड़ा खजाना था. अपनी कमीज़ में हीरे भर कर जब वह गुफा से बाहर आने लगा तो गुफा के दरवाज़े पर एक बहुत बड़े एक आंख वाले दैत्य को देख कर दंग रह गया.

दैत्य इतना बड़ा और डरावना था कि उसे देख कर घसीटा राम के होश उड़ गये थे. सांस गले में फंसी की फंसी रह गई थी. उसे चकमा देकर भाग निकलना और जान बचाना घसीटा राम के लिये असंभव था.

और वह जान बचाने के लिये गुफा के अन्दर की ओर भाग लिया.

उधर एक आंख का दैत्य गुफा के अंदर हाथ डाल कर घसीटा राम को पकड़ने की कोशिश कर रहा था.

पर गुफा इतनी लम्बी थी कि पूरा हाथ अन्दर देने पर भी वह गुफा के आखिर तक नहीं पहुंच सकता था. और उस से बचने के लिये घसीटा राम एक कौने में सिमट कर गठरी बन गया था.

और हनुमान चालीसा का पाठ कर रहा था.
हनुमान जब नाम सुनावे, भूत पिशाच निकट नहीं आवे. जो सुमरे हनुमत बलबीरा, संकट हरे मिटे सब पीरा.
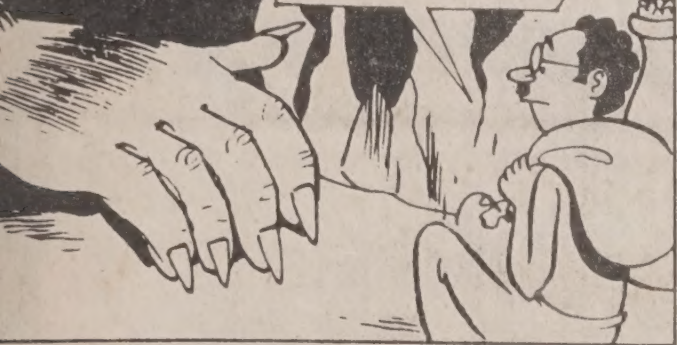
वाह वाह. जै बजरंग बली. हनुमान का नाम लेते ही 'दैत्य गायब हो गया. इसे कहते हैं, ''संय्या भये कोतवाल तो मोहे डर काहे का.''

र जैसे ही घसीटा राम गुफा से बाहर निकलने लगा . . .!
अरे बाप रे!

संय्या नहीं. कोतवाल तो वह है, जो बाहर पहरा दे रहा है.

अब वहां बहुत सी भेड़े जमा होने लगी थीं.

'दैत्य उन भेड़ों को एक-एक कर के गुफा के अंदर घुमाने लगा था.

और सारी भेड़े अंदर करके उसने गुफा का दरवाजा बन्द कर दिया था.

आगे चल कर उन्हों ने देखा एक मकान की सीढ़ियों पर बै
एक आदमी रो रहा था. और वहां बहुत से आदमियों की भीड़ ज
थी.
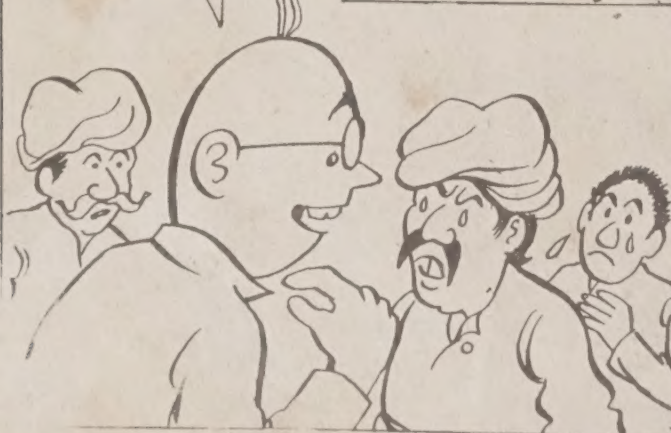
पतलू ने राजकुमारी से विवाह की इच्छा जाहिर की, तो सब ने
सके सामने सर झुका दिये.
तुम धन्य हो. तुम महान् हो.
तुरंत ही पतलू को दुल्हा बना कर एक गधे पर बिठा दिया गया.
घोड़ी की बजाये गधी मिली है सवारी के लिये, इस विवाह की
हली सुंदरता समझ में आई ?
विवाह राजकुमारी से हो रहा है. इसके लिये बाईसिकल की
सवारी मिल जाती तो वह भी चलती.
तुम नहीं समझोगे यह बातें. तुम पुराने युग के आदमी हो और हम दो हजार साल आगे वैज्ञानिक युग के आदमी हैं.
वैज्ञानिक क्या होता है ? किसी ख़ास जानवर का नाम है ? तुम कभी बैठे हो उस पर अपना विवाह कराने के लिये ?
क्यों बहस कर रहे हो. इन पुराने ज़माने के आदमियों से. यह बहुत पिछड़े हुये हैं. हमारे ज़माने के लोग चांद पर पहुंच गये हैं और वहां बस्तियां बनाने की योजनायें बना रहे हैं. इन से पूछोगे तो यह यही कहेंगे कि चांद पर बुढ़िया चरखा कात रही है.
ते चलते पतलू की बारात
ज महल तक पहुंच गई.
पतलू खटपट नगरी के झटपट राजा के
ने था
यह कौन है ?
यह राजकुमारी का नया वर है महाराज. आज अपनी किस्मत आजमाने के लिये मेरे बेटे की बारी थी. पर यह इस जिद पर अड़ गया कि राजकुमारी से विवाह मैं करूंगा
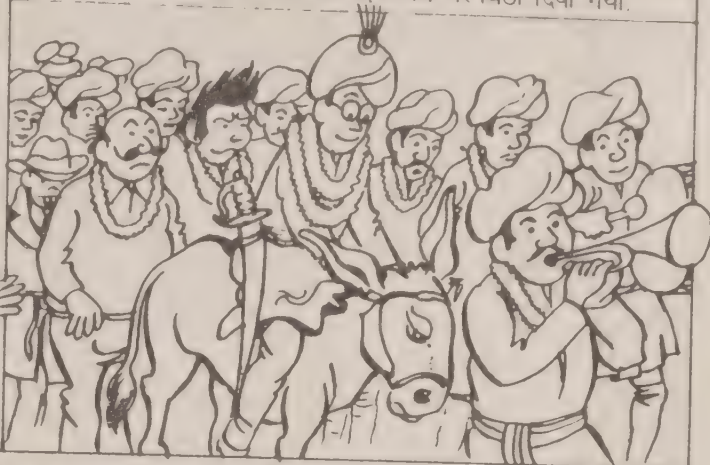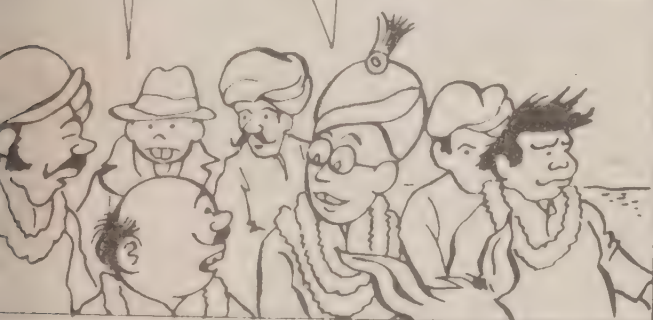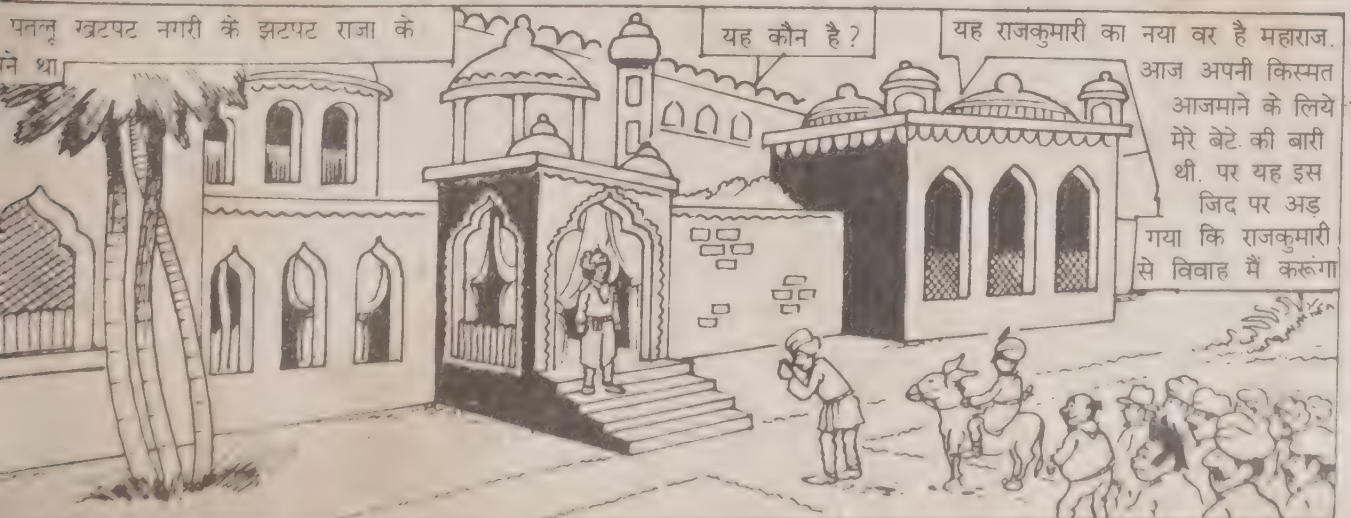
हम. खुश हुये इसकी वीरता पर. अब तक सभी वर यहां रोते हुये आते रहे हैं. यह पहला वीर है, जिस के मुंह से हंसी के फूल झड़ रहे हैं.

आते रहे है और आते रहेंगे. अभी यह भी रोयेगा थोड़ी देर बाद, जब इसका पाला धूमकेंतवे से पड़ेगा.

क्या विवाह के लिये कोई शर्त है ? यह धूमकेंतवा कौन है ? ?
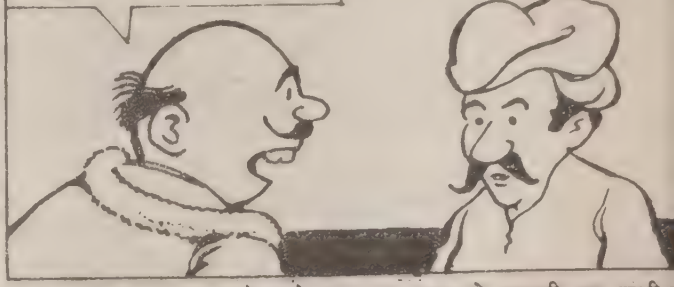
एक दैत्य है!
दैत्य है? अरे मैं मारा गया तरावड़ी के घाट
तरावडी के घाट नहीं, खटपट नगरी में, जहां तुम बिछा रहे थे अपनी खाट.
बहुत से लोग पीछे पीछे थे. झटपट राजा के सिपाही पतलू को अब वहां ले आये जहां उसे धूमकेंतवे से मुकाबला करना था.
इस से आगे तुम अकेले आगे जाओगे. उस पहाड़ी के दूसरी ओर धूमकेंतवे का ठिकाना है.
पहाड़ी के दूसरी ओर पहुंच कर धूमकेंतवे से पतलू का सामना हुआ तो उसके पैरों तले से जमीन निकल गई.
गुर . . .र . . .र . . .र . . . गुर . . .र . . .र . . .ररर . . .र . . . आज यह मरियल सा आदमी भेजा है खाने के लिये.
?
धूमकेंतवे ने जैसे ही हाथ मारा, पतलू उछल कर उसकी पकड से निकल गया
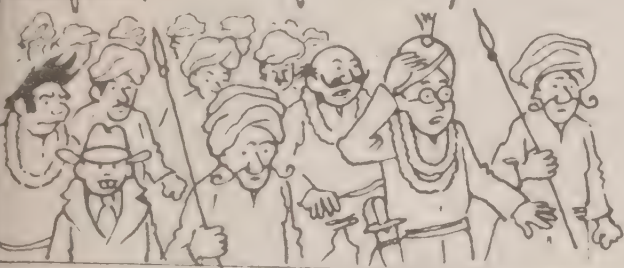
और अब सीधा भाग कर घुस गया गुफ़ा के अंदर.

जहां वह सीधा गुफ़ा के एक कोने में छुपे घसीटा राम से जा टकराया.

तू कैसे आ मरा यहां?

राजकुमारी से विवाह करने के चक्कर में. क्या तेरी भी किसी राजकुमारी से आंख लड़ी है, जो तेरी आंखें कमैटी के नलके की तरह टपक रही हैं?

मेरी आंखें उस राजकुमार ने फोड़ी हैं, जिस का हाथ हमें पकड़ने के लिये ऐसे आगे बढ़ रहा है...
जैसे लोगों का दिल पकड़ने के लिये काका हाथरसी की कविता आगे बढ़ती है.
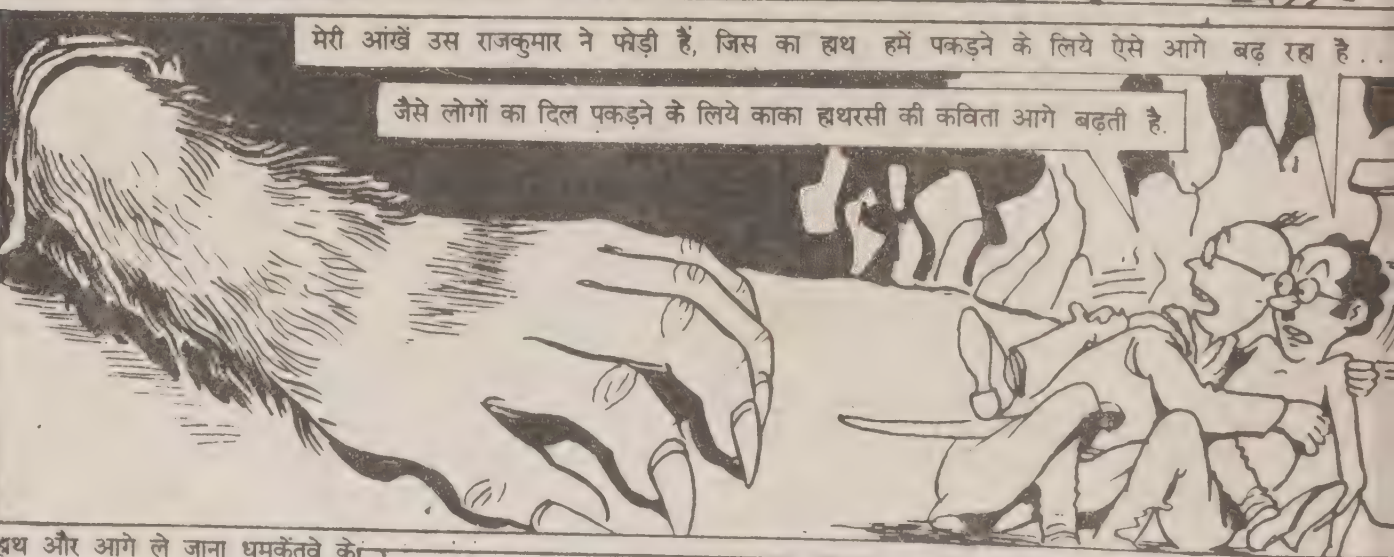
हाथ और आगे ले जाना धूमकेतवे के लिये मुश्किल था. इस लिये वह पतलू और घसीटा राम को पकड़ नहीं पा रहा था

और मोटू, चेला राम, और जूडोमास्टर ने लोगों की बातों से अनुमान लगा लिया था कि पतलू की छुट्टी हो गई!
तनी देर हो गई है, अब तक लौट कर नहीं आया.
भला कोई भी लौट कर आया है आज तक?
अपने उल्लूपने में मारा गया बेवकूफ.
आगे के हंगामें, आगमी अंक में.

दीवाना थन्डर बोल्ट
आपको पता ही होगा कि हमारी वायु सेना ने अपनी स्वर्ग जयन्ती के अवसर पर इस वर्ष थन्डर बोल्ट नामक हंटर जहाजों का नया स्क्वैडरन बनाया है जो वायु में कला-बाजियां दिखाते हैं। एक साथ उड़ते हुये नौ हंटर कई आकृतियां बनाते हैं। लूप, डायमंडः वाल्केयर और वाइनग्लास आदि। यह सब नाम अपरिचित विदेशी हैं हमारा सुझाव है कि थन्डर बोल्ट कुछ ऐसी आकृतियां बनायें जो हमारी सभ्यता संस्कृति और देश का प्रतिनिधित्व करें जैसे
छः हंटर विमान बेलन बनायें। बेलन हमारे देश की महिलाओं का भयानकतम अस्त्र है।
तेरह मिग-२३ विमान इस फार्मेशन में उड़ कर निरन्तर चढ़ती मूल्य रेखा का चित्रण कर सकते हैं।
सात हंटर इस स्थिति में उड़ कर चमचा बना सकते हैं। चमचा गीरी हमारे देश की सबसे विकसित कला है।
१६ मिग-२१ जहाज इस आकार में उड़ते हुये अंग्रेजी का q बनायें। हमारे देश में आज हर जगह क्यू में खड़ा रहना पड़ता है।
गंडे तावीज और चमत्कारी बाबाओं द्वारा पैदा किये लॉकेट आज खूब प्रचलित हैं। छः हंटर विमान लॉकेट का आकार बनाते हुए उड़ सकते हैं।

नहीं श्रीमान् वह एक भयावह रहस्यमय रेडियो प्रोग्राम था. क्यों ठीक है न''.

''सबसे रहस्यमय, इस प्रोग्राम का आरम्भ ही एक भयावह चीख से होता था. चीख चंदू घंटे की होती थी—और बाद में तरह-तरह के रहस्यों में प्रोग्राम बदल जाता था. चंदू और राजा इसे लिखते थे. मेरा ख्याल है चंदू का प्लाट होता था जिसे राजा लिखा करता था. वह गुत्थियों और संकेतों इत्यादि में माहिर था. खैर यह सब तो पुरानी कहानी है.''

''तुम यहां किस लिये आये हो, लड़कों ? पत्रिका इत्यादि का चंदा लेने तो नहीं आये ना.''

''हम चंदू घंटे द्वारा आपको भेजे हुए संदेश के लिये आये हैं, उन्होंने एक और संदेश से आपसे संदेश के लिये पूछने को कहा है , ''राजू ने उत्तर दिया.

''ओह संदेश'', श्री गोवर्धन सिंह अचानक उत्साहित से दिखाई दिये. ''हां, हां एक दिन अचानक ही कहीं से आ गया. वर्षों से चंदू घंटे के बारे में कुछ सुना नहीं केवल क्रिसमस कार्ड ही आता रहा है. अन्दर आओ मुझे विश्वास है मैं संदेश ढूंढ़ कर तुम्हें दे दूंगा.''

वह इन्हें घर के अन्दर ले गया. कमरा साफ सुथरा था जिसमें सबसे महत्वपूर्ण एक बड़ा सा टेपरिकार्डर और एक बड़ा सा शेल्फ था जिस पर डिब्बों के डिब्बे रिकार्ड किये टेपों से भरे थे. डेस्क की एक दराज से उन्होंने एक लिफाफा निकाला, वह खोला जा चुका था.

''यह लो, मैंने इस खोल लिया था, भीतर का संदेश देखने की मेरी इच्छा बहुत प्रबल हो गई थी, परन्तु मुझे इसका सिर पैर कुछ भी समझ नहीं आया'' उन्होंने कहा.

कमला खरे से सौ हजार छीन लो
मेढ़क का खुला भाग पकड़ो।
जिस जगह दुनिया है।
हिल मत! स्थिर का दुगना करो।
आवाज प्रतिध्वनित होती
हैट का सिरा-काम में लाओ।

''हैं न बे सिर पैर का संदेश'' पढ़ते हुए गोवर्धन सिंह ने कहा, ''मैने इसको समझने का काफी प्रयास किया परन्तु कुछ भी समझ नहीं आ पाया. पहली पंक्ति में, मैं ने कभी चंदू की किसी कमला खरे नाम की महिला मित्र के विषय में नहीं सुना था. और हंसते हुए उन्होंने कहा, ऐसा लगता है, खरे का खरा दिखाना चाहता है,'' उन्होंने हंसते हुए कहा. ''संदेश के विषय में आकर पूछने वाले को दे देना. संदेश मेरे पास है और तुमने आकर मांगा है, सो यह लो, वैसे मैं तो यह भी नहीं जानता तुम लोग हो कौन ?
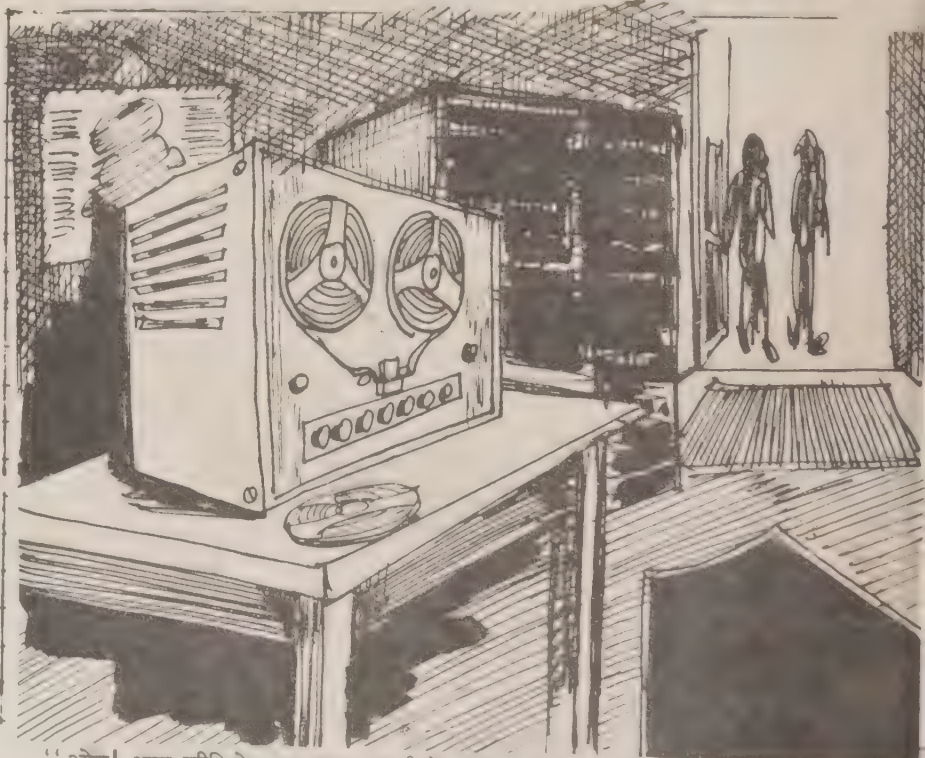
''ओह! क्षमा कीजिये, यह हमारा कार्ड है ''राजू ने उन्हें तीन जासूसों का कार्ड थमा दिया, मि० गोवर्धन ने उसे ध्यान से पढ़ा और उन से हाथ मिलाया.

''तुम से मिल कर खुशी हुई, यदि तुम चंदू घंटे में दिलचस्पी रखते हो तो, शायद तुम हमारे कुछ पुराने प्रोग्रामों की भी सुनना चाहोगे वह प्रोग्राम जो उनकी चीख से आरम्भ होते थे. वह बहुत ही अजीब थे, हर बार वह अलग किस्म की चीख निकालता था और उनके प्रोग्राम भी बहुत ही रहस्ययम होते थे आजकल टेलीविजन के लिये ऐसे प्रोग्राम नहीं लिखे जाते. वह सब डिब्बे जो दिखाई दे रहे हैं चंदू घंटे के साथ मेरे सभी प्रोग्रामों के टेप हैं.''

महिन्दर राजू का मन पुराने रेडियो के दिलचस्प प्रोग्राम सुनने को ललचाया क्योंकि उन्हें मालूम था कि रेडियो के कोई-कोई प्रोग्राम आजकल के टेलीविजन पर होने वाले प्रोग्रामों से भी रहस्यमय होते थे। परन्तु उन के पास इस सब के लिए समय नहीं था। इसलिये नमस्कार कर वे प्रतीक्षा करती कार की ओर चल दिये, परन्तु अभी भी वे रहस्यमय संदेश में ही उलझे हुए थे। राजू ने बरखासिंह को वापिस माथुर कबाड़ी घर चलने का आदेश दिया, साथ ही महिन्दर से कहा ''आशा है हरी और श्याम हमारे वापिस पहुंचने तक वापिस आ गये होंगे यदि उन्हें भी कोई संदेश मिल गया होगा तो दोनों संदेशों को मिला कर पहेली सुलझाने का प्रयास करेंगे.''

परन्तु श्याम और हरी हैडक्वाटर पर नहीं थे कम से कम लड़कों के हैडक्वाटर पर तो नहीं पहुंचे थे. वे करीब की कोतवाली के दफ्तर से पुलस के मुख्य अधिकारी श्री रन्धावा के पास ले जाये जा रहे थे। उन्हें तेज कार चलाने के अपराध में पुलिस कान्सटेबल ने गिरफ्तार किया था. ''हमारे अफसर कहते हैं वे तुम्हें जानते हैं.'' पुलिस मैन ने श्याम से कहा, ''परन्तु मैं तुम्हें ऐसी आसानी से छूटने

नहीं दूंगा—तेज कार के शौकीन तुम जैसे लड़के साधारण जनता के लिये एक खतरा बने रहते हैं.'' वह उन्हें भारी भरकम पुलिस अफसर रन्धावा के कमरे में ले गया। रन्धावा जो कागजों से भरी मेज के पीछे बैठे थे इनकी ओर देखने लगे।

'अच्छा श्याम' तुम्हें यहां देख कर मुझे अफसोस हो रहा है। हमारे पुलिस मैन के कहने के मुताबिक तुमने एक भारी गलती की है। पहाड़ी क्षेत्र में इस तेजी से कार चलाने से तुम दोनों ही मर सकते थे साथ ही तुम औरों को भी मारते।''

''क्षमा कीजिए चीफ'' श्याम बोला ''हम कार तेज नहीं चला रहे थे बल्कि हमारी कार का पीछा किया जा रहा था पीछा करने वाली कार हमारी कार के निकट ठीक उसी समय पहुंची थी जब अफसर जैराम ने हमें रोका और इसी बीच दूसरा ड्राईबर भाग गया.''

''पीछा हो रहा था हूं।'' अफसर समझते हुए मुस्कराया आपको इन्हें उन पहाड़ी मोड़ें पर मुड़ते देखना चाहिये थे यह लोग बराबर-बराबर रेस लगा रहे थे. यदि उस समय वहां कोई और सड़क पर आ जाता तो अवश्य ही अपनी जान से हाथ धो बैठता।''

''अच्छा तुम्हारी कार का पीछा क्यों हो रहा था,'' अफसर रन्धावा ने पूछा'' ''कोई भी तुम्हें देखते ही जान सकता था कि तुम्हारे पास अधिक पैसे नहीं होंगे''।

''हम एक रहस्य की खोज कर रहे हैं, ''श्याम बोला'',

''हम एक चीखती घड़ी के रहस्य का पता लगा रहे हैं।''

''चीखती घड़ी रहस्यमय घड़ी! उफ क्या आपने कभी ऐसी बेतुकी कहानी सुनी है?

''यह सही है'' श्याय बोला ''एक बार हमने ''हरे भूत'' का पता लगाया था''। ''चीफ आपको याद है आप ने ही हमें -यानी श्याम नारायण, राजू माथुर और महिन्दर सिंह को उसका पता लगाने को कहा था''।

श्याम उस रहस्य का जिक्र कर रहा था जिसके विषय में चीफ रन्धावा ने पहले कहा था,''मैं तो इसे समझने में बिलकुल असमर्थ हूं। अब चीफ ने भी सिर हिलाया।''

''हां यह सच है'' वह बोले, ''यह घड़ी कहां है और इसमें ऐसा क्या रहस्य है?''

''वह बाहर कार में रखी है, यदि हमें उसे लाने की अनुमति मिल जाये ते हम आपको दिखा देंगे कि वह क्यों इतना रहस्य मय है।

''अगली सीट पर एक जिप लगे बैग में है'' अफसर को जाते देख श्याम बोला—

प्रतीक्षा करते चीफ श्याम से बोले कि वह उसकी बात पर विश्वास करना चाहते हैं। परन्तु इन्हीं दिनों किशोरों द्वारा कार बुरी तरह खतरनाक ढंग से चलाने की और तीव्र गति से चलाने की इतनी अधिक घटनायें हुई हैं कि हमें कुछ अवश्य ही करना पड़ेगा—यह लो जै देव वापिस आ गये, क्या तुम्हें मिली?

पुलिस अफसर ने सिर हिलाया।

''अगलीसीट पूरी खाली है कोई बैग नहीं है कोई घड़ी नहीं है. वहां कुछ भी नहीं है.

श्याम और हरी एक दूसरे की ओर देखते ही रह गये।

''ओह''! घड़ी की चोरी हो गई!''

प्रश्न—परन्तु उत्तर नहीं.

''समझ नहीं आता श्याम और हरी अभी तक क्यों नहीं आये।'' महिन्दर ने राजू से पूछा वे दोनों हेडक्वाटर में डेस्क पर मि० गोवर्धन से पाये संदेश में उलझे हुए थे। मैं बाहर जा कर देखता हूं, वे आ रहे हैं या नहीं।

वह कोने में गया जहां राजू ने स्टोव के पाइप को छत से ऐसे फिट किया हुआ था कि वह एक पेरीस्कोप के समान काम करता था इसे लड़के 'सी-आल' कहते थे, ट्रेलर के चारों और टूटे-फूटे पुराने सामान का ऐसे ढेर लगाया हुआ था कि वह बाहर से दिखाई नहीं देता था, परन्तु भीतर से आवश्यकता पड़ने पर 'सी-आल' की सहायता से इसके ऊपर से बाहर की हर वस्तु देखी जा सकती थी।

महिन्दर ने देखते ही राजू को बताया कि हरी की कार अभी-अभी आहाते के भीतर घुसी है, कुछ ही क्षण बाद एक सांकेतिक थाप 'टनल-टू' में खुलने वाले ट्रेप दरवाजे पर सुनाई दी। महिन्दर ने ट्रेप डोर उठाया और थके हारे से हरी और श्याम भीतर घुसे।

'तुम्हें संदेश मिले,' राजू ने पूछा।

''हां । हमें एक संदेश मिला तो है पर हमारी तो कुछ समझ में नहीं आया'' श्याम ने उत्तर दिया।

''कृपया मुझे दिखाओ''। राजू ने विनती की ''और क्या घड़ी है तुम्हारे पास?''

''अरे नहीं। घड़ी मेरे पास नहीं है,'' श्याम ने दुखित स्वर में उत्तर दिया।

राजू ने श्याम पर एक तीखी नज़र डाली ''तुमने घड़ी खो दी।''

''घड़ी की चोरी हो गई, जब कार [illegible] स्टेशन पर खड़ी थी'' हरी ने बताया।

''तुम पुलिस स्टेशन पर क्या कर रहे थे, क्या तुम किसी ऐसी परेशानी में पड़ गये थे कि पुलिस की सहायता की जरूरत पड़ गई.'' महिन्दर ने पूछा।

शेष पृष्ठ २८ पर

प्लास्टिक युग

आज प्लास्टिक का हमारे जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश है। प्लास्टिक की चीजों पर नजर डालो तो लगेगा कि वास्तव में हम प्लास्टिक के युग में ही रह रहे हैं। प्लास्टिक को जीवन में छा जाने दो और हमारी मानो। प्लास्टिक महान है प्लास्टिक ही सफलता की कुंजी है। इस जीवन और उस जीवन का सुधार प्लास्टिक से ही संभव है।

प्लास्टिक के चरणों में जीवन अर्पण कर दो।

पुस्तकें भी प्लास्टिक की छपवाओ। गन्दी हो जायें तो परवाह नहीं ,मम्मी धोकर दे देगी। पुस्तकें जल्दी फटेंगी भी नहीं।
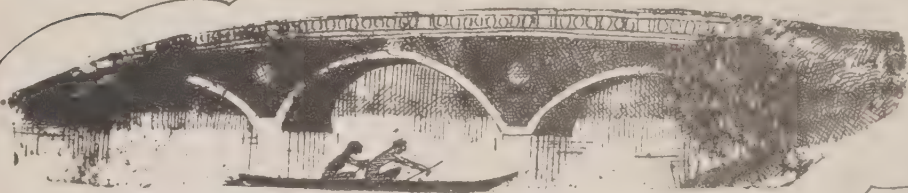
प्लास्टिक के पुल बनाये जायें। कम से कम ठेकेदारों के बनाये रेत के पुलों से तो ज्यादा ही पक्के व टिकाऊ साबित होंगे।

पार्कों के बाहर प्लास्टिक की प्रेमिकायें मिलें। घास पर जमा कर प्रेमालाप की फुल ड्रैस रिहर्सल हो जाया करे।

क्यों बीबियां भी प्लास्टिक की ही खरीदी जायें अच्छे डिजाइन की होंगी और सस्ती पड़ेंगी। खाना नहीं खायेंगी।

नेताओं के लिये प्लास्टिक की भीड़ हो। एक परमानेंट मैदान में भीड़ जमा दो और जिस नेता का जी करे बुकिंग करवा ले और जाकर भाषण झाड़ आये।
प्लास्टिक के घर मिलने लगें तो मजा आ जाये। तबादला हो गया तो डिस्मैंटल करके साथ ले गये व नयी जगह जोड़कर फिर खड़ा कर दिया।
कवियों के लिये प्लास्टिक के बादल व प्लास्टिक के चांद उपलब्ध हों।
पेड़ों पर प्लास्टिक की चिडियां बिठा दी जायें और कवि गाना गाये '' जहां डाल-डाल पर प्लास्टिक की चिड़िया करती हैं बसेरा, वह भाग् देश है मेरा''।
कुछ चमत्कारी बाबा केवल प्लास्टिक बाबा बनें। हवा में से वह केवल प्लास्टिक की बनी चीजें ही पैदा करें।
गहने भी प्लास्टिक के पहनो। प्लास्टिक हल्का है, रंगदार है और चोरी का डर नहीं रहेगा।
अपनी प्रेमिका को सब्ज बाग मत दिखाओ। प्लास्टिक के रंग बिरंगे बाग दिखाओ।
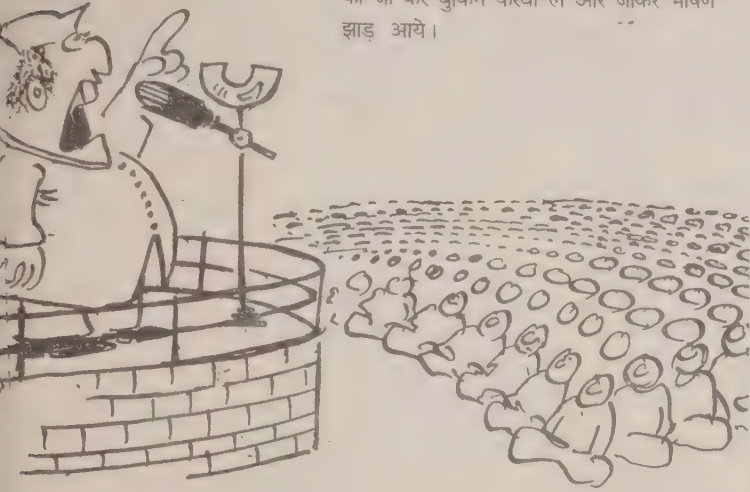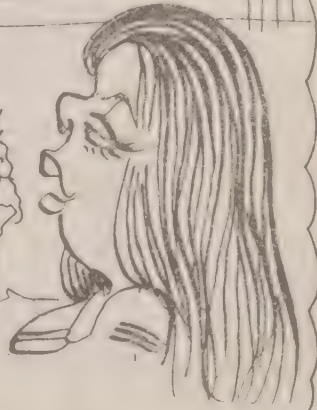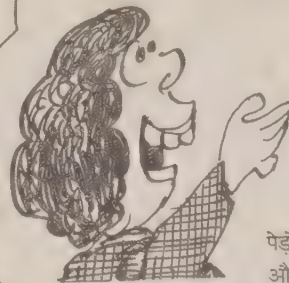
प्र०: हम बूढ़े क्यों होते हैं ?

उ०: आज के युग में हर कोई युवा दिखाई देना चाहता है, चाहे वह बुढ़ापे के द्वार पर ही क्यों न खड़ा हो, वह अपने रंग ढंग व अन्दाज व पोशाक इस प्रकार दिखाता है मानो वह पूर्ण युवा हो। कोई-कोई तो अपने बाल रंग तथा चेहरे की झुरियों को प्लास्टिक सर्जरी से मिटवा कर बुढ़ापे को रोकने का असफल प्रयास करते हैं। परन्तु इन कृत्रिम उपायों के बजाये कुछ बातों का ध्यान रखने से कुछ समय के लिये बुढ़ापे की चाल को धीमा किया जा सकता है।

अति यात्रा चाहे पैदल हो या मोटर गाडी या बस, की जाये तो यह मनुष्य को जल्दी बुढ़ापे को ओर ले जाती है क्योंकि अत्यन्त यात्रा से शरीर की शक्ति का ह्रास होता है, तथा मानसिक तनाव बढ़ने से शरीर की नाड़ियां कठिन होती हैं। नाड़ी काठिन्य बुढ़ापे की निशानी होती है।

अत्यन्त शीत ऋतु में अत्यन्त शीत पदार्थों का सेवन भी शरीर में बुढ़ापे को बुलावा देता है। अत्यन्त ठंडे पेय, आइसक्रीम का सेवन, एयर कन्डीशन, रुम कूलर इत्यादि शरीर से स्वेद को रोकते हैं (स्वेदन से नाड़ी कोमलता बढ़ती है) अतः यह शरीर के तन्तुओं, नाड़ियों में कठोरता उत्पन्न करता है। अत्यन्त कठोरता ही जर्जरीकरण का कारण है।

कुभोजन अर्थात अपक्व आहार, दुग्ध आहार, अत्यन्त मात्रा में भोजन, असन्तुलित आहार, दूषित अन्न सेवन, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, मन के विपरीत भोजन इत्यादि—यह सभी कुभोजन कहलाते हैं, तथा यह शरीर को वास्तविक शक्ति प्रदान नहीं करते औ शरीर में धातु क्षीणता होती जाती है, अतः धातुक्षय बुढ़ापे को निमन्त्रण देता है।

साथ-साथ यदि आप लगातार मानसिक तनाव से पीड़ित हैं, या चिन्ता आपसे दूर नहीं होती है तो समझिये बुढ़ापा आपके कदम चूम रहा है। इसलिये मन का सदा प्रसन्न रहना, निश्चिन्त रहना मनुष्य में दीर्घायु एवं अच्छे स्वास्थ्य का चिन्ह है। हर समय की मानसिक चिन्ता शरीर के तन्तुओं व नाड़ियों को क्षीण [illegible] बनाती है और यह दुर्बलता, [illegible] काठिन्य शरीर को बुढ़ापे [illegible]

परन्तु निश्चित काल-समय पर तो सभी बूढ़े होते ही हैं। प्रत्येक जीव की आयु लगभग निश्चित ही होती है अतः यह काल या समय भी बुढ़ापे का कारण है। जिस कारण को कोई दूर नहीं कर सकता है।

प्र०: हृदय रक्त धमनी रोग क्यों होता है इसके क्या लक्षण हैं एवं इसका क्या निदान है ?

उ०: वर्तमानयुग में हृदय रोग से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति भयभीत सा रहता है। हृदय रोग का कारण जो अचानक मृत्यु का कारण बन जाता है उसे ''हृदय रक्त धमनी'' रोग कहते हैं। यह हृदय धमनी संपूर्ण शरीर में रक्त संचार करती है तथा उसे स्वयं अपना कार्य करने के लिये शक्ति की आवश्यकता होती है। हृदय को रक्त कारोनरी आर्टरी या हृदय रक्त धमनी द्वारा प्राप्त होता है। हृदय संपूर्ण शरीर को लगभग चार से पांच लिटर रक्त प्रति मिनट पम्प करता है। इस मात्रा का लगभग ५ प्रतिशत रक्त स्वयं हृदय को हृदय धमनियों द्वारा प्राप्त होता है जो हृदय को दाईं और बाईं ओर से घेर कर अपनी लघु शाखाओं द्वारा मिलकर हृदय के प्रत्येक भाग में रक्त का संचार करती हैं। यह रक्त हृदय की मांसपेशियों द्वारा हृदय का पम्प चलाने में काम करता रहता है। इसी प्रकार हृदय के कुछ विशेष भाग भी इससे शक्ति प्राप्त करते हैं जहां हृदय की धड़कन बनकर प्रारंभ होती है और विषेश मार्ग द्वारा पूरे हृदय में प्रवाहित होती है। हृदय को रक्त से मुख्यतः आक्सीजन की प्राप्ती होती है। हृदय की मांसपेशियां जितना अधिक काम करेंगी, उसकी गति उतनी ही बढ़ेगी। जैसे दौड़ते समय हृदय की धड़कन बढ़ने से अधिक आक्सीजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार घबराहट और चिंता के क्षणों में भी अधिक आक्सीजन की आवश्यकता होती है।

जब हृदय रक्त धमनी रोग ग्रसित होती है तो हृदय की रक्त की प्रचुरता में कमी आती है और इस रोग के आरिम्भक लक्षण दिखाई देते हैं। हृदय के इस रोग को 'रक्त अभाव रोग' के नाम से जाना जाता है। आइये देखें इस रक्त अभाव रोग के कारण क्या हैं. हृदय रक्त धमनियों में यदि किसी कारण रुकावट पैदा हो जाये तो स्वभाविक है कि उनसे हृदय को पूरा रक्त प्राप्त नहीं हो पायेगा। इस रुकावट का विषेश कारण इन धमनियों को मोटा एवं कड़ा हो जाना होता है। बढ़ती उम्र के साथ साथ रक्त धमनियों में यह मोटापन तथा कड़ापन आ जाता है। यह रोग पैंसठ वर्ष की उम्र के बाद अधिक बढ़ जाता है। रक्त धमनियों के इस मोटेपन तथा कड़ेपन का प्रभाव शरीर के अन्य भागों पर भी पड़ता है जैसें मस्तिष्क, गुर्दे, आखें इत्यादि रक्त धमनियों में चर्बी की तह जम जाने के कारण इनमें कड़ापन और मोटापन आ जाता है।

उच्च रक्त चाप एवं मधुमेह ऐसे रोग हैं जिनके कारण रक्त धमनी रोग अधिक तेज़ी से बढ़ता है। मोटापा भी एक ऐसी अवस्था है जिससे उपरोक्त तीनों ही रोग अधिक होते हैं।

यदि हृदय रक्त धमनियां चाहे थोड़े ही समय के लिये सिकुड़ जायें इससे हृदय का स्वयं का रक्त का संचार कम हो जाता है। हृदय रक्त धमनियों की इस सिकुड़न को कारनरी स्पास्म कहते हैं। यह कई जाने अनजाने कारणों से हो सकती हैं जैसे धुम्रपान, अत्यधिक मानसिक चिंता व आघात, अधिक ठंड, तथा कुछ दवाइयों का असर आदि।

यदि शरीर में रक्त की अत्यधिक कमी हो जाये तब भी हृदय व रक्त द्वारा आक्सीजन उचित मात्रा में नहीं मिलती और हृदय रक्त अभाव रोग हो जाता है।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि सामान्य दैनिक कामकाज में तो हृदय अपना कार्य ठीक करता है परन्तु कड़ी मेहनत वाला कार्य करने पर छाती में दर्द हो जाता है। क्योंकि मेहनत करते समय हृदय को अधिक आक्सीजन की आवश्यकता होती है जो उसे रक्त द्वारा प्राप्त होती है परन्तु ४० वर्ष की आयु के बाद रक्त धमनियों के मोटे एवं कड़े होने के कारण इनमें रक्त का अधिक संचार नही हो सकता और इस प्रकार ''हृदय रक्त अभाव'' रोग के लक्षण स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। यह रोग कई अलग अलग कारणों से होता है परन्तु यदि यही कारण आपस में मिल कर एक ही व्यक्ति में उपस्थित हो जायें तो रोग की आशंका अधिक बढ़ जाती है। उदाहरण के लिये एक सज्जन की आयु ४० वर्ष की है, मोटे और आराम तलब हैं। अधिक रक्त-चाप और मधुमेह है, सिगरेट भी अधिक पीते हैं, घर का कुछ भारी सामान ले कर बसों के पीछे भागते हैं और ठंडी रात में चौथी मंजिल पर चढ़ते हैं तो ऐसे व्यक्ति का प्रभु ही रक्षक है। अथवा ऐसे ही एक सज्जन जिन्हें यकायक अपने स्वास्थ्य का ध्यान आये और शीघ्रता शीघ्र मोटापा ठीक करने के लिये

शेष पृष्ठ १०६ पर

दीवाना

आस्ट्रोटर्फ

नेशनल स्टेडियम में हॉकी के लिये आस्ट्रो टर्फ बिछाई गयी है। अब घास की जगह आस्ट्रोटर्फ ने ले ली है आगे-आगे आस्ट्रोटर्फ टैक्नीक के नये-नये क्या क्षेत्र हो सकते हैं। कुछ दीवानी संभावनायें—

जिनके अभी दाढ़ी मूँछ नहीं आई वे चाहें तो आस्ट्रोदाढ़ी या आस्ट्रो मूंछें लगवा सकते हैं

आधुनिक विचारों के प्रेमियों के लिये पार्कों में विशेष लवर्स आस्ट्रोटर्फ के टुकड़े लगाये जा सकते हैं।
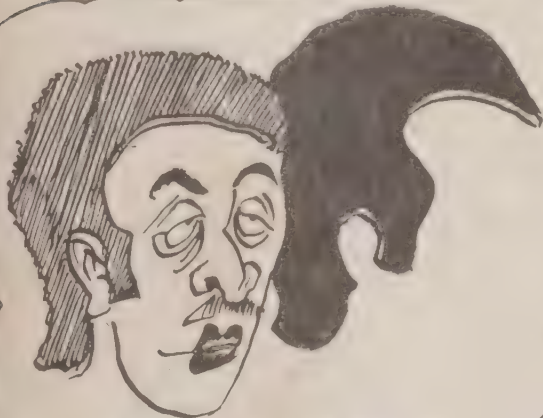
गंजों के सिर पर आस्ट्रो-हेयर बिछाया जा सकता है।

गधों के लोटने के लिये विशेष आस्ट्रो रोलिंग टर्फ बनाई जा सकती है।
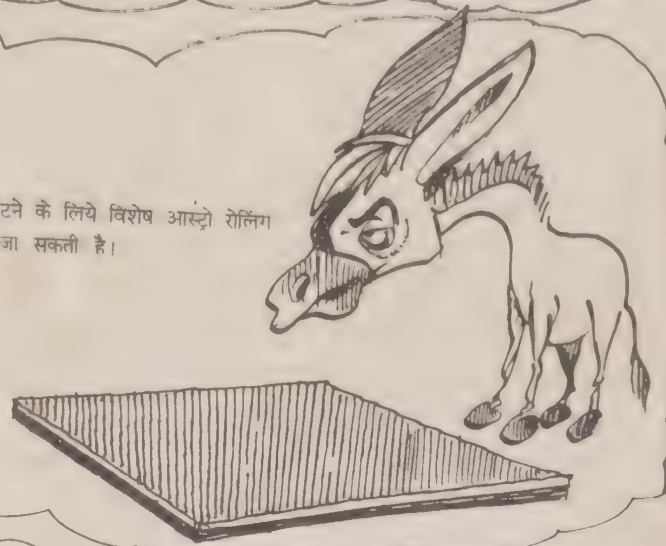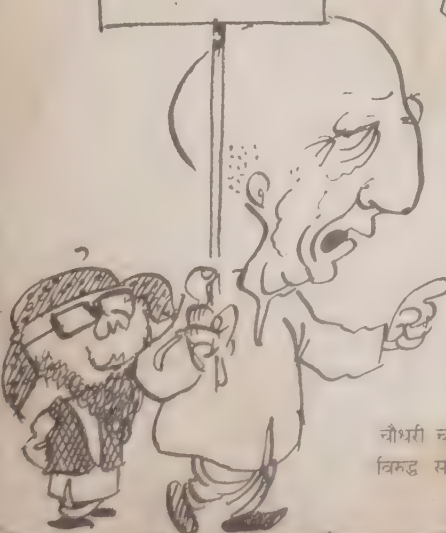
चौधरी चरण सिंह को आस्ट्रोटर्फ में किसानों के विरुद्ध साजिश नजर आ सकती है।

कुछ नये मुहावरे जन्म ले सकते हैं.

राम गोपाल, रेवाड़ी : हमारे देश से ग़रीबी कब दूर होगी?

उ.: जब ''ग़रीबी हटाओ'' का नारा दूर होगा.

गोविन्द राम सिंधी, हनुमान गढ़ : इस स्वार्थी दुनिया में मनुष्य का सच्चा साथी कौन हो सकता है?

उ. : कोई दीवाना.

प्रीतम सिंह, लुधियाना : क्या आप के बच्चे में भी कोई बात आप जैसी है?

उ. : कुछ बातें हम से भी दो चार हाथ आगे हैं. कल ही जब हम शाम को घर पहुंचे, तो देखा मुन्ना बाहर सीढ़ियों पर मुंह फुलाये बैठा है. हम ने उस के सर पर प्यार से हाथ फेर कर पूछा, माजरा क्या है? तो उसने बड़ी सादगी से उत्तर दिया, ''अब मेरा आप की पत्नी के साथ निबाह नहीं होता.

अनिल, अजय, संजय, बरेली : चाचा जी, हमें SUN के सुन्दर रंगीन कार्ड प्राप्त हुये क्या आप पाठकों की राय से किसी नतीजे पर पहुंचे हैं?

उ. : अवश्य. आप की राय के बिना तो हम एक कदम भी नहीं चल सकते.

अलताफ हुसैन, बरेली : आज कल लड़किया पर्दा क्यों नहीं करतीं?

उ. : क्योंकि आज कल पर्दा लड़कों की अक्ल पर पड़ गया है.

मुकेश कुमार चौहान, फरीदपुर : दुनिया में सब से अमीर और सब से गरीब कौन है?

उ. : कैलकुलेटर.

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली : इन्सान खुद को कब खो बैठता है?

उ. : जब वह अपनी तारीफ़ सुन कर खुश होता है.

सचिन देव : लखनऊ: सहनशक्ति किस में अधिक होती है? औरत में? या मर्द में?

उ. : हमारे सर की हालत देख कर आप को क्या अंदाज़ा होता है? एक बात और बताइये सचिनदेव जी. क्या आप ने कोई गंजी औरत देखी है?

जगमोहन सिंह, खुराना, चास, बोकारो स्टील सिटी : डीयर अंकल, जो पीता है वह मदहोश हो जाता है. जो मदहोश हो जाता है, वह सो जाता है. जो सो जाता है. वह बुरे काम नहीं करता. जो बुरे काम नहीं करता वह जन्नत में जाता है. तो क्या यह सच है चाचा जी, कि जो पीता है वह जन्नत में जाता है?

उ. : बिलकुल सच है. सोलह आने सच है. हमारे पड़ौसी राम प्रसाद जी पी कर रोज जन्नत में जाते हैं. कल ही की बात है, बोतल पी कर वह नाली में पड़े हुये थे. ऊपर से कुत्ते ने धार मारी तो वह बोले, ''वाह वाह, जन्नत में हूरें 'आबे हयात' बरसा रही हैं.''

सुमन कुमारी शर्मा, अलीगढ़ : चाचा जी, आप को किस प्रकार की फ़िल्में पसन्द हैं?

उ. : जो हमारे घर का कबाड़ा न करे. पिछले दिनों हमें डाक से एक नई फ़िल्म की तीन टिकटें मिली. एक हमारे लिये, दूसरी हमारी श्रीमतिजी के लिये और तीसरी हमारे चांद से मुन्ना के लिये. टिकट भेजने वाले ने साथ में अपना नाम पता कुछ नहीं लिखा था. हम ने कहा यह टिकटें हमारे किसी मित्र ने भेजी हैं. श्रीमती जी ने कहा मेरी किसी सहेली ने भेजी हैं. हुआ यह, कि हम इस बात पर बहस करते पिक्चर चले गये. पर जब घर लौटे तो सब ताले टूटे पड़े थे. घर का सब सामान ऐसे साफ़ था, जैसे किसी ने झाड़ू दे दी हो. और चोर मेज़ पर एक पर्ची छोड़ गया था, जिस पर लिखा था, ''कहिये फिल्म कैसी रही?''

सय्यद बाकर हुसैन, आकोला : चाचा जी, दूल्हे को घोड़ी पर ही क्यों बिठाते हैं?

उ. : कौन कहता है घोड़ी पर ही बिठाते हैं? बड़ी दिल दुखाने वाली बात याद दिल दी आप ने. जब हमारी शादी हुई थी तो बैठने के लिए घोड़ी मिल नहीं सकी. महूरत निकला जा रहा था. इस लिये सगे संबंधियों ने हमें एक साईकल के कैरियर पर बिठाया. हम सेहरे के पीछे अपने आंसुओं को छुपाये रहे और भाई लोगों ने आगे-आगे बैंड बजा कर साईकल पर हमारी ''घुड़चड़ी'' की रस्म अदा कर दी.

मधुर चुटे, धुलिया : मुर्ग़ा सुबह बांग क्यों देता है?

उ. : क्योंकि जब मुर्ग़ा बांग देता है, तब सुबह होती है.

इरफान खां, शाहजहां पुर : प्रिय चाचा जी, आदम पागल हो जाये तो पागलखाने भेजा जाता है. गधा पागल हो जाये तो उसे कहां भेजेंगे?

उ. : क्या उत्तर दें आप के प्रश्न का इरफान भाई. लगता है आप कभी दिल्ली आये नहीं और हम कभी शहजाहांपुर गये नहीं.

गहवा वीरगंज : दिल में तूफ़ान कब उठता है?

उ० : जब आस पड़ौस में कोई हसीना दबाव वाला क्षेत्र पैदा कर रही हो।

राकेश कुमार गर्ग, मेरठ : चाचा जी, क्लासिकल प्रेम और मॉडर्न प्रेम में क्या अन्तर है?

उ. : बड़ा अंतर है. और सच पूछो तो बहुत छोटा अंतर है. हमारे पड़ौसी के लड़के को नाच देखने का बहुत शौक है. पड़ौसी को जब इस बात का पता चला तो एक रोज़ उस ने अपने लड़के से कहा, देखो, अगर तुम्हें नाच देखने का शौक ही है तो क्लासिकल नाच देखो, जैसे कथाकली, मनिपुरी. पर बेटे, कैबरे या डिस्को डांस कभी मत देखना. वहां

तुम्हें वह देखने को मिलेगा जो तुम्हें कभी नहीं देखना चाहिए.'' इस पर लड़के ने हामी भर दी. पर अगले महीने जब उसे जेब खर्च मिला तो वह सीधा डिस्को डांस देखने पहुंच गया. और पहुंच कर उसे पता लगा, कि जो कुछ उसने देखा, वह वास्तव में उसे नहीं देखना चाहिये था. 'वहां जिस आदमी पर उस की पहली नज़र पड़ी, वह थे उसके पिताजी.

आपस की बातें
दीवाना पाक्षिक।
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जो मक्खियां नहीं मारते वे क्या करते हैं?

जी हां, आप बेकार बैठे होते हैं तो मक्खियां मारते रहते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मक्खियां नहीं मारते। जो मक्खियां नहीं मारते वे करते क्या हैं? लीजिये हम आपको बता देते हैं।

बैठे-बैठे ख्यालों में एक्ट्रेसों से इश्क लड़ाते हैं और उनसे [illegible]यां रचाते रहते हैं।

घर में घड़ी-रेडियो या टेपरिकॉर्डर पड़ा है तो जरा सी खराबी आने पर भी उसे खोल कर पुर्जा-पुर्जा करते हैं और ठीक करने की नाकाम कोशिश करते हैं।

पत्र पत्रिकाओं के पाठकों के पत्र वाले कॉलम के लिये पत्र लिखते रहते हैं। लड़कियों को गुमनाम अश्लील पत्र लिखते हैं।
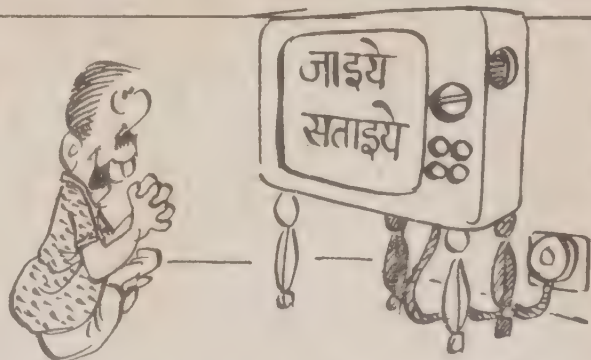
टी वी. का हर प्रोग्राम देखते हैं और कुबेर दत्त जी और मुक्ता जी को हर प्रोग्राम की प्रशंसा में पत्र लिखते हैं।

रोज विविध भारती में फर्माइशी प्रोग्रामों के लिये फर्माइश भेजते रहते हैं। ये लोग अपने नाम के पोस्ट कार्ड छपवा कर रखते हैं।
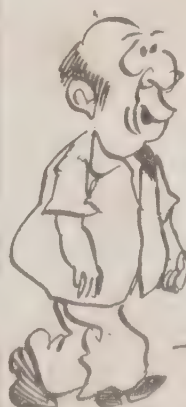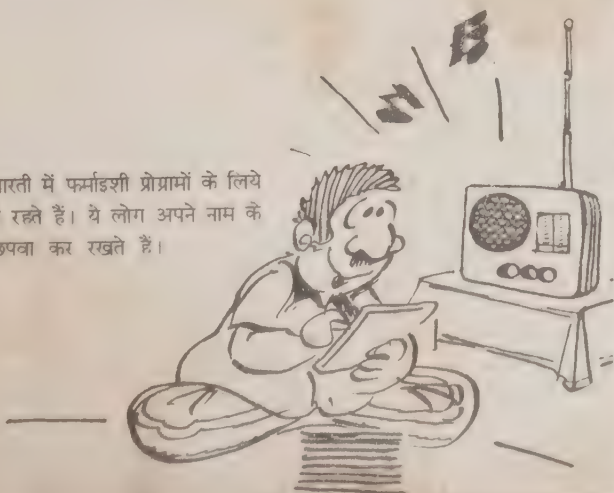
भाषण सुनने चले जाते हैं और तालियां बजाते हैं या हूटिंग करते हैं।

भारत का इंगलैंड दौरा
१९८२ क्रिकेट श्रृखंला

भारत की टैस्ट क्रिकेट टीम जो इस गर्मियों में इंगलैंड के दौरे पर है वह अपने टैस्ट मैचों की पचास वर्षीय स्वर्ण जयन्ती मना रही होगी। भारत ने अपना प्रथम टैस्ट १९३२ में इंगलैंड में खेला था। इस सिलसिले में इंगलैंड भारतीय टीम के लिये विशेष समारोहों का आयोजन करेगा। खेद केवल इसी बात का होगा कि इस बार चुनी गयी क्रिकेट टीम पूरी तरह भारतीय क्रिकेट का प्रतिनिधित्व नहीं करती। टीम में गावस्कर/उम्रीगर ने बम्बई के खिलाड़ी ही भर दिये हैं। जब कि उनसे अच्छे खिलाड़ी और क्षेत्रों से उपलब्ध थे। सबसे दुखद तो यह है कि रणजी ट्रॉफ़ी चैम्पियन दिल्ली का केवल एक खिलाड़ी टैस्ट टीम में है। इस बार आयरलैंड/बेलफास्ट में खेलने वाली भी हमारी टीम प्रथम विदेशी टीम होगी।

दौरे के कार्यक्रम

मई १६ - १८ - ब्रैड फोर्ड में पार्क शायर के विरुद्ध

मई १९-२१ - लार्डस में एम सी सी के विरुद्ध

मई २२-२४ - कैंटरबरी में कैन्ट के विरुद्ध

मई २६-२७ - बेल फास्ट में आयरलैंड के विरुद्ध

मई २९-३१ - साऊथैम्पन में हैम्पशायर के विरुद्ध

जून २ - प्रथम एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच हैडिंगले में

जून ४ - द्वितीय एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ष्ट्रीय मैच ओवल में

जून ५-७ - नारथैम्पन में नारथैम्पटन शायर के बीच

जून १०-१५ - प्रथम टैस्ट मैच लार्डए में

जून १७-१८ - क्रेम्ब्रिज में कम्बाइंड यूनिवसिटीज के विरुद्ध

जून १९-२१ - ब्रिस्टल में बोरसेस्टर शायर के बीच

जून २४-२८ - ओल्डट्रेफर्ड में दूसरा टैस्ट मैच

जुलाई ३-५ - चैम्सफोर्ड में ऐसेक्स के विरुद्ध

जुलाई ८-१३ - तीसरा क्रिकेट टैस्ट मैच ओवल में

सुरुनायक
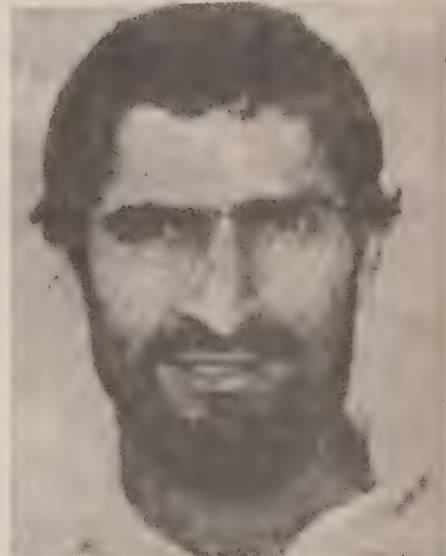
गुलाम पार्कर
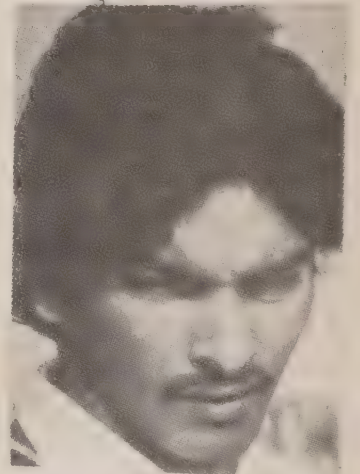
रवि शास्त्री

बंबई के तीन खिलाड़ी जिनका चुनाव संदेहास्पद ढंग से हुआ है।

पृष्ठ २० से आगे

कठिन व्यायाम करना शुरु कर दें, जो उन्होंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं किया तो निश्चित ही वे अपने पर जुल्म कर रहें हैं।

परन्तु प्रश्न ये उठता है कि यदि रोग हो ही गया तो आप इसके लृक्षण कैसे जान पायेंगे ?

यदि तेज़ चलने या कोई परिश्रम का काम करने से छाती में दर्द अथवा सांस घुटने का अहसास हो तो चेत जाइये, तथा यदि हृदय गति जरूरत से ज्यादा बढ़ जाये जो धड़कन के रूप में मालूम पड़ती है और यह अवस्था ३-४ मिनट के आराम के बाद भी ठीक न हो तो लापरवाही न कीजिये। बेहोशी तथा चक्कर आने की अवस्था भी इस रोग का संकेत देती है और इन अवस्थाओं में व्यक्ति को डाक्टर की सलाह लेने में क्षण मात्र भी देरी नहीं करनी चाहिये।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि इस रोग से बचने के लिये क्या करें ?

कृपया मोटे न होइये। बार-बार वजन घटाना और बढ़ाना अच्छा नहीं। मोटापा शुरू से ही न हो तो अच्छा है और मोटापा घटाने का विचार जब भी आये तुरन्त प्रयास शुरू कर दीजिये, दृढ़ निश्चय से। जीवन के प्रारम्भिक क्षणों में ही शारीरिक कामकाज और व्यायाम को जीवन का अंग बनाइये। ४० वर्ष की आयु के बाद कठिन शारीरिक कार्य जिसकी आदत न हो न करें। इस आयु के बाद ४ किलोमीटर घूमना सर्वश्रेष्ठ व्यायाम है। चलने की रफ़्तार इतनी तेज नहीं होनी चाहिये जिससे सांस फूले। यदि आप हृदय धमनी रोग से बचना चाहते हैं तो दृढ़ निश्चय कर धूम्रपान करना छोड़ दें।

उच्च रक्तचाप तथा मधुमेह जैसे रोगों की रोक थाम में तत्परता बरतनी चाहिये। जैसे ही छाती में दर्द या घुटन का आभास हो वहीं बैठ कर या लेट कर आराम कर लेना चाहिये। उचित अनुचित स्थान का विचार नहीं करना चाहिये। तथा ऐसी अवस्था में कोई भी शारीरिक कार्य नहीं करना चाहिये। साईकिल चलाना व तेज-तेज चलने से भी बचना चाहिये।

भोजन संतुलित एवं हल्की मात्रा में करें। भोजन में शक्कर अवं लवण को कम ही खाने की आदत रखें। घी मक्खन तथा सर्दी से जम जाने वाले तेलों की अपेक्षा न जमने वाले तेलों का ही प्रयोग करना श्रेयस्कर है।

सिलबिल पिलपिल
और नवें एशियाई खेल
तुम दो बीड़ियां फूकते ही रहोगे या कोई काम की बात भी करोगे ? यहां देश की इज्जत दाव पर लगी है और तुम दो बेखबर बैठे हो।
देश की इज्जत दाव पर लगा दी ? कौन कर रहा है ऐसा ? जुये में किसी ने देश की इज्जत लगादी। दाव पर पैसा लगाओ जादा से जादा अपनी बीबी को लगाओ।
जुये की बात नहीं है। १९ नवम्बर १९८२ से दिल्ली में नवें एशियाई खेल हो रहे हैं। यह खेल देश की प्रतिष्ठा का सवाल होगा। दिल्ली में चारों ओर फ्लाई ओवर और कई स्टेडियम बन रहे हैं। खिलाड़ियों को जोर-शोर से ट्रेनिंग दी जा रही है। इन खेलों को देखने आये लोगों को पता लगना चाहिये कि खेलों और इन्जीनियरिंग के क्षेत्र में हमारे देश ने कितनी प्रगति की है। यह केवल सरकार और खिलाड़ियों का काम नहीं होगा, जब तक सारी जनता इसमें सहयोग नहीं करेगी तब तक काम नहीं बनेगा।
FRIENDSHIP·FRATERNITY·FOREVER
IX ASIAN GAMES
Delhi 1982
खेल हो रहे हैं तो हमें क्या लेना है ? गन्ने या मक्की के फसल की बात करनी हो तो हमसे पूछ लो। बाकी बेकार हमें तंग मत करो। हमने फॉस्ट बोलर कपिल देव पैदा करके थमको दे दिया, अब हौर क्या चाहिये ?
नृह तू हमें बेकार के झंझटों में मत फसाया कर। हम किसी दिन तेरी मूंछें उखाड़ कर उससे किसान सम्मेलन के नारे लिखने का ब्रुश बनायेंगे। हमें एशियाई खेलों से क्या वास्ता है ? अगर चौधरी चरण सिंह को एशियाई खेलों का चेयरमैन बनाया होता तो बात हौर थी।
अरे थम दोनों की राष्ट्रीय भावना कहां घास-चरने चली गयी है या गन्ने का रस पीने गयी है। जरा सोचो अगर यह खेल सफल नहीं हुये तो देश की बेसती होगी, दिल्ली की सती होगी जहां यह खेल हो रहे हैं। दिल्ली वालों की बेसती का मतलब थमारी बेसती क्योंकि थम भी १६ साल से दिल्ली में रह रहे हो। थमारी बेसती का मतलब है चौधरी चरण सिंह की बेसती।
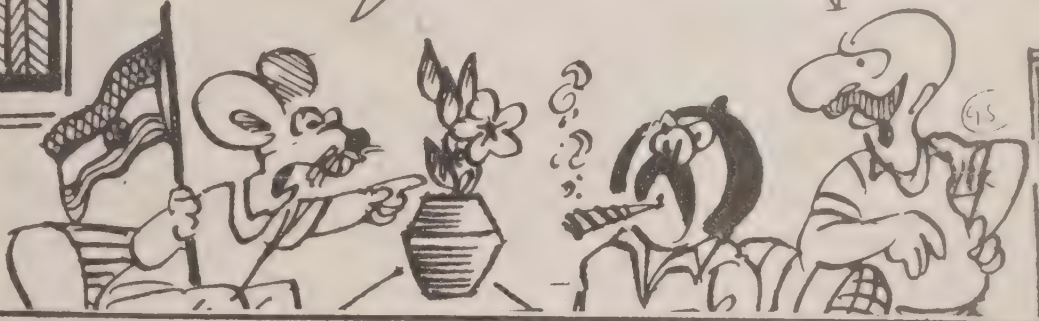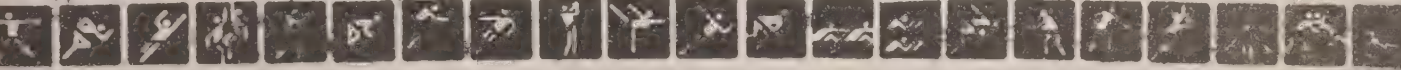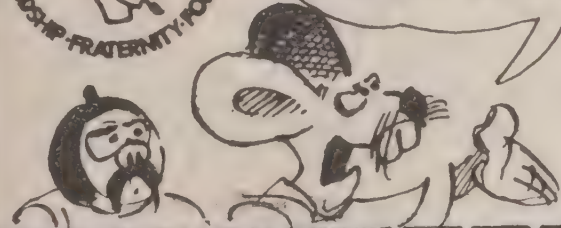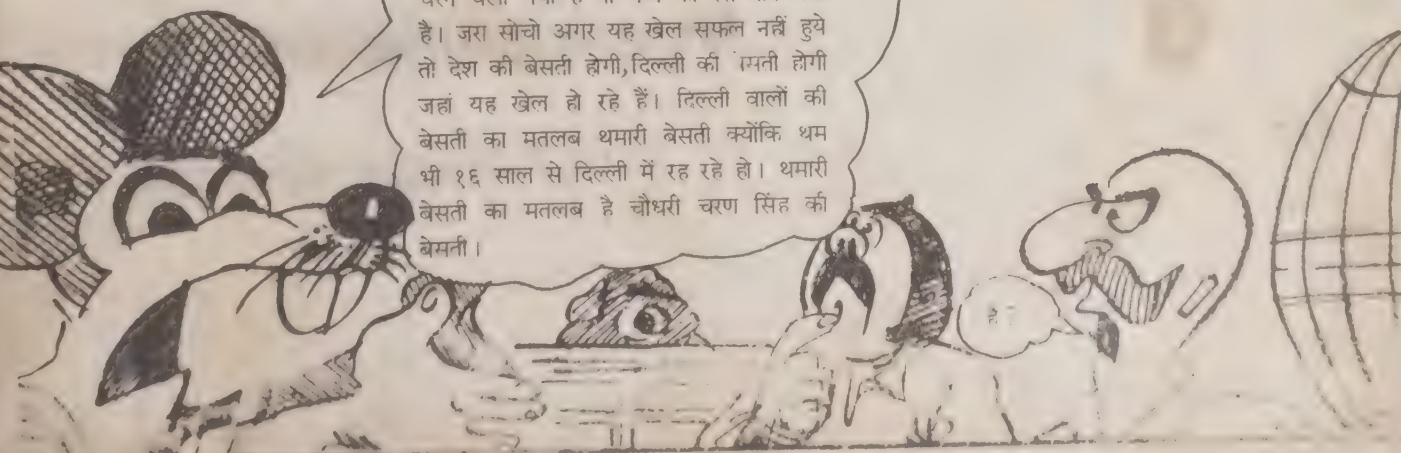
ओहो! तो क्या इसमें चौधरी चरण सिंह जी की भी बेसती है? हम ऐसा नहीं होने देंगे। चौधरी साहब के लिये हम कभी भी लट्ठ घुमाने को तैयार हैं। हम अपना लट्ठ लेकर एशियाई खेल खेलने आये सारे खिलाडियों की टांगें तोड़ देंगे।
इस चूहे के दिमाग ने देखो कितनी दूर की बात सोची है। हमारे दिमाग में यह बात क्यों नहीं आई? शायद हमें कई महीनों से अपनी बागड़ी भैंस का दूध पीने को नहीं मिला है, इसलिये खोपड़ी में तरावट कम हो गई है।
अब हमने फैसला कर लिया है कि हम एशियाई खेलों को सफल बनाने के लिये हर संभव कोशिश करेंगे, अपनी धोती कस लेंगे।
हमारी आंखों से अब से हर समय एशियाई खेलों की ज्योति फूटा करेगी। एशियाई खेलों के लिये हम जान भी कुर्बान कर देंगे।
खेलों के प्रति लोगों में जागरण पैदा करना होगा। हम चौबीस घंटे यह ट्रैक सूट पहन कर गांव-गांव, गली-गली घूम कर इकतारा बजाते हुए नवें एशियाई खेलों का प्रचार करेंगे। स्टेडियमों की मिट्टी से तिलक करेंगे।
सिलबिल मार्केट जूता खरीदने गया था, चार घंटे हो गये अब तक नहीं आया। पता नहीं क्या कर रहा है। एशियाई खेलों के प्रचार के लिये वह नया जूता लेने गया था।
यह आ रिया है। अरे थने यह क्या हालत बना रखी हैं? आंखें सूजी हुई हैं। कपड़े कीचड़ में सने हुए हैं। घुटने फट गये हैं ऐसा लग रहा है कहीं से पिट कर आ रहा है?
यह सब एशियाई खेलों के कारण हुआ।
मैं जूता खरीदने गया तो अपने साइज का सात नम्बर जूता खरीदने की बजाये नौ नम्बर का जूता खरीदा क्योंकि यह नवें एशियाई खेल हो रहे हैं न। मैंने सोचा नौ नम्बर लेना ही एशियाई खेलों की भावना के अनुरूप होगा। सो चलने में बड़ी दिक्कत हुई। दो बार नाली में जा गिरा। एक बार ओपन मेन होल में जा गिरा और रास्ते में एक दो लडकियों से टकरा गया। उनसे लात और थप्पड़ खाये।

चलो कोई बात नहीं जो कुछ हुआ वह एशियाई खेलों की खातिर हुआ न। ऐसे काम करने के लिये बड़ी कुर्बानियां देनी पड़ती हैं। सारे देश को तेरे ऊपर फख्र होगा कि हमारे पास एक ऐसा आदमी है जो देश की आन के लिये गन्दी नाली में भी गिर सकता है।

तुझे याद है आज मीनाक्षी से तेरी डेट है?

जब एशियाई खेल सामने हों तो क्या हमें प्रेम में समय बर्बाद करना चाहिये?

क्यों नहीं, प्रेम का प्रतीक दिल है, जिसका आकार जन्तर मन्तर की तरह है जो एशियाई खेलों का सिम्बल है।

आह मीनाक्षी, मुझे पता नहीं था कि तुम्हें भी एशियाई खेलों में इतनी दिलचस्पी है। मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई और मेरा सिर गर्व से ऊंचा उठ गया है। तुम्हारी गर्दन अप्पू के सूंड जैसी है। और तुम्हारे लम्बे बाल मुझे इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में बिछाये जाने वाले लम्बे-लम्बे ट्रैकों की याद दिलाते हैं। तुम्हारे सारे व्यक्तित्व में मुझे नवें एशियाई खेलों का बिम्ब नजर आ रहा है।
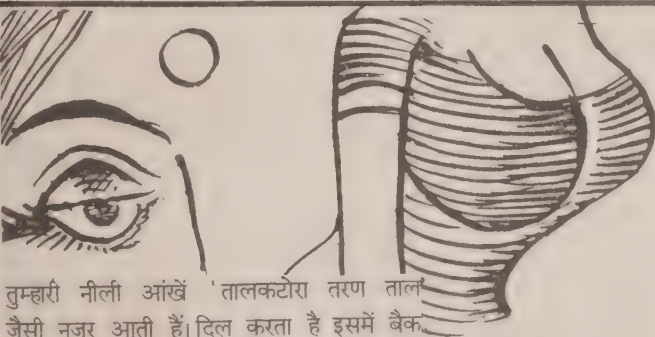
तुम्हारी नीली आंखें 'तालकटोरा तरण ताल' जैसी नजर आती हैं। दिल करता है इसमें बैक स्टोक स्विमिंग करूं।
तुम्हारी पतली लम्बी बांहें डाक्टर करणीसिंह के टारगेट शूटिंग रायफल के बैरल जैसी हैं।
तुम्हारी कमर साइकिल वैलोड्रोम जैसी गोलाई लिये है।

और गौर से मै तुम्हारे पैर और सैंडल को देखता हूं तो मुझे लोदी रोड जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम का मॉडल नजर आता है।
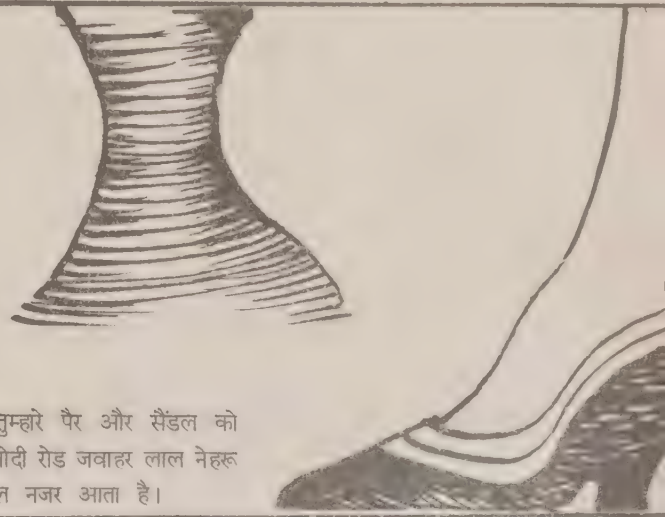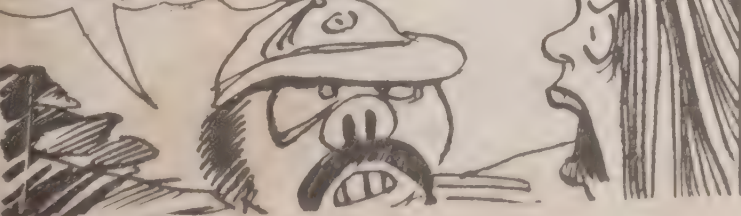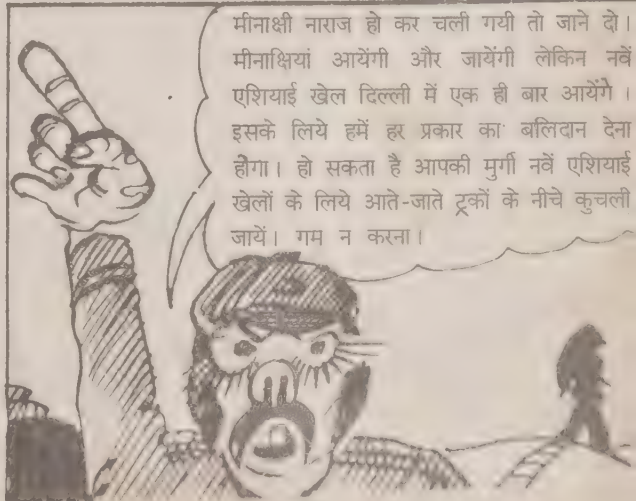
''नहीं तेज़ कार चलाने के लिये हमें पकड़ लिया गया था.'' हरी ने बताना आरंम्भ किया। ''देखो। जब हम पहाड़ी से उतर रहे थे किसी ने हमारा पीछा करना शुरु किया—''

श्याम और हरी ने अपने साहसिक कार्य की कथा सुनाई और अन्त में उसने बताया कि चीफ रन्धावा ने कृपा कर उन्हें रिहा कर दिया। साथ ही उन्हेंने कहा कि उन्हें नहीं मालूम हम किस घपले में फंसे हुए हैं परन्तु यदि रहस्य ऐसा हो जाये कि लोग तुम्हारे पीछे लगे हुए हैं तो आ कर पुलिस को सब कुछ बता देना।

''मेरे विचार से हमारी अभी तक की खोज में पुलिस को कोई दिलचस्पी होनी सम्भव नहीं है'' राजू बोला ''पुलिस वाले इसे मजाक समझेंगे। हम भी थोड़ी आफ्त में पड़ गये थे''।

राजू और महिन्दर ने उन्हें कमालहसन और छोटे युवक से भेंट के सम्बन्ध में बताया। अब राजू का ख्याल था कि छोटा व्यक्ति या तो जौकी का कार्य करता है या फिर पहले करता होगा''।

''इस सब का परिणाम यह है कि किसी न किसी को घड़ी और संदेशों में दिलचस्पी है। लगता है घड़ी तुम्हारा पीछा करने वाले व्यक्ति ने ही चुराई होगी। जब उसने पुलिस अफसर को तुम्हें थाने ले जाते देखा तो उसने चुपके से वहां आकर कार से घड़ी चुरा ली।

''परन्तु घड़ी और संदेशों के विषय में किसे मालूम हो सकता है यह मेरी समझ में नहीं आ रहा'' श्याम बोला।

यह तो हम जानते ही हैं कि मि० जीटर को घड़ी का पता है और हो सकता है उन्हेंने किसी और को भी बताया हो। फिर कमालहसन और गोवर्धनराय को भी हमने अनजाने में सब कुछ बता दिया था, इसलिये मेरे ख्याल से काफी लोग घड़ी की जानकारी रखते हैं, राजू बोला।

''मुझे तो यह सब जानकर कोई खुशी नहीं हुई ''महिन्दर बोला,'' अच्छा। राजू जो संदेश श्याम लाया है वे भी वैसे ही बेतुके हैं जैसे हमारे लाये हुए हैं क्या?'' श्याम के लाये संदेश राजू ने मेज पर खोल कर रखे। ''ये भी उसी तरह पेचीदा हैं'' वह बोला ''तुम इन्हें दिमाग ख़राब करने वाले ही क्यों नहीं कह देते और बड़े-बड़े शब्द प्रयोग करने की क्या आवश्यकता है'' महिन्दर बड़बड़ाया।

''अच्छा-अच्छा, ठीक है,'' राजू कुछ मुस्कुराहट के साथ सहमत हुआ ''ये बहुत ही रहस्यमय पेचीदा दिमाग खराब करने वाले हैं अब ठीक है।

''अब तुम मेरी भाषा में बोले,'' महिन्दर बोला, ''अच्छा अब देखते हैं, हम इसका कुछ मतलब निकाल सकते हैं क्या? श्याम तुम मुझे पहले महाराज कुमार और रत्ना से अपनी भेंट की पूरी रिपोर्ट दो''राजू ने आदेश दिया

श्याम ने वैसा ही किया तथा राजू उसकी हर बात को बड़े ध्यानपूर्वक सुनता रहा ''महाराजकुमार हस्पताल में बीमार हैं'' वह बोला ''और चंदू घंटे ने उन्हें घड़ी भेजी थी यह सोच कर कि वे सारे संदेश एकत्रित कर उनका रहस्य जान लेंगे—और फिर क्या? यही तो प्रश्न है''।

''घड़ी के नीचे संदेश पर लिखा था फिर कार्य करो जिसे करके तुम प्रसन्न होगे'' श्याम ने याद दिलाया।

''बिलकुल ठीक, परन्तु वे खुश क्यों होंगे, इससे क्या हासिल होगा? यही तो हमें मालूम करना है। अब संदेशों को बारी-बारी देखते हैं। हरी और श्याम जो संदेश लाये हैं जाहिर है वह ही पहला संदेश है, पहले उसे ही देखते हैं उसमें अभी भी लिखा था।

''खूनी रानी जो तुम्हारी नहीं है।
राय जो किसी को दी जाये।
मलिका को हैरानी में मत रहने दो।
मैं भी नहीं वह भी नहीं,
इसके कीड़े एकांत पसन्द करते हैं
आंखे खोलो,''

'मैं अभी भी नहीं समझ पा रहा यह कैसा संदेश है. यदि यह किसी किस्म का कोड नही है तो हरी बोला।

''यह संदेश मि० महाराज कुमार के लिये था जो बीमार पड़े हैं'' राजू ने उन्हें याद दिलाया ''वे संकेतों और पहेलियों के माहिर हैं, और यह संदेश उन्ही के लिये है। यदि वे इसे सुलझा सकते हैं तो हम भी अवश्य इसके रहस्य का पता लगा सकते हैं''

''राजू ऐसा तुम केवल अपने ही विषय में कह सकते हो, हम तो इसे सुलझाने में अपने को सर्वथा बेकार समझते हैं'', महिन्दर बोला।

''पहली नज़र में तो इस संदेश के वाक्य रहस्यमयी पहेली के शब्दों के संकेत से प्रतीत होते हैं। मेरे विचार से इसके हर वाक्य का अर्थ केवल एक-एक शब्द ही है और जब हम उन शब्दों को ढूंढ लेंगे तो छः शब्दों का संदेश हमारे पास होगा।

'परन्तु शब्द क्या होंगे,'' महिन्दर ने जानना चाहा जैसे खूनी रानी जो तुम्हारी नहीं है में क्या है, तुम्हारी नहीं है तो किसकी है यानी मेरी है अर्थात मेरी या ब्लडी मेरी'।

'राय जो किसी को दी जाये' अर्थात राय जो किसी को नम्रता पूर्वक दी जाये। राय का दूसरा भी कोई शब्द होगा? राजू ने पूछा ''श्याम ज़रा शब्दकोश तो दिखाना''।

बन्द करो बकवास
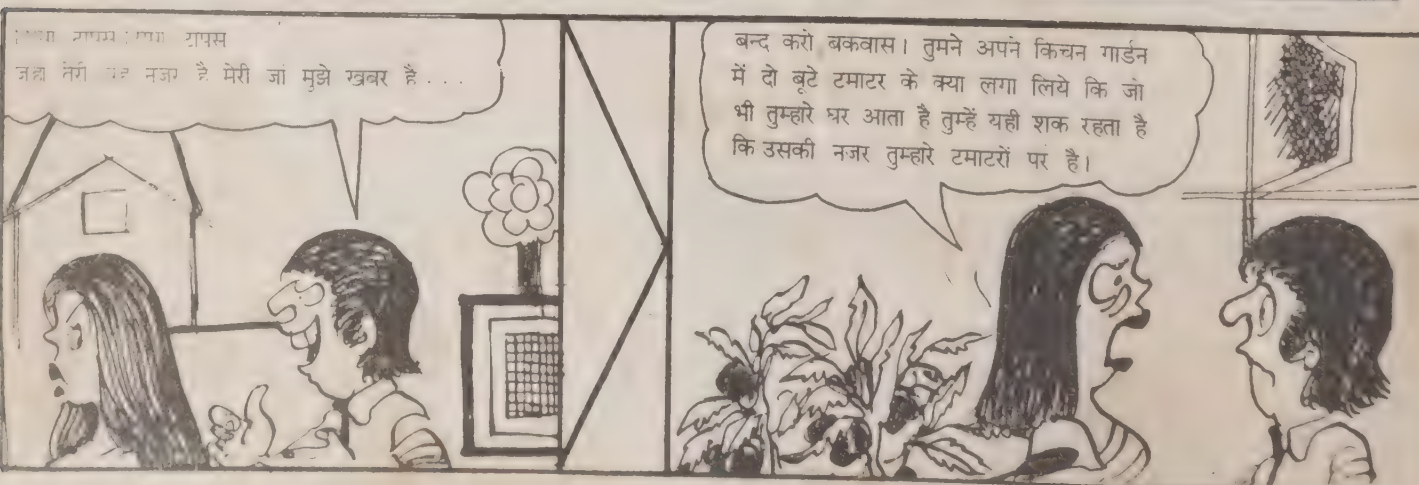
श्याम ने करीब की किताबों की अलमारी से शब्दकोश उठा कर राजू को थमा दिया। तुरन्त ही राजू ने शब्दकोश के पन्ने पलटने आरम्भ कर दिये "यह देखो राय' अर्थात सलाह या किसी को कोई कार्य करने के तरीके की सलाह'। देखते हैं यह शब्द कहां ठीक बैठता है।

मैं तुम्हें अपनी सलाह देता हूं" महिन्दर बोला. रुक जाओ महिन्दर',' राजू तेजी से बोला. महिन्दर हक्काबक्का सा राजू की ओर देख कर बोला, "रुक जाओ ? क्यों ?. मैं तो केवल अपनी सलाह ही दे रहा था—"

"पकड़ लिया" राजू ने उसे बताया 'सलाह, सलाह राय देने का नम्र तरीका है ठीक है न ? मुझे लगता है यह पंक्ति तो तुमने सुलझा दी"।

महिन्दर देखता ही रह गया, 'लगता है यह संदेश सुलझाना अधिक कठिन नहीं है, फिर भी मुझे सलाह वलाह कुछ समझ नही आ रहा"।

"समझ तो अभी मुझे भी कुछ खास नही आ रहा" फिर भी अभी तो हमें बाकी के शब्द भी ढूंढ़ने हैं"। राजू ने सहमत हो जवाब दिया।

तीसरी पंक्ति है "मलिका को हैरानी में मत रहने दो" मलिका, मलिका को रानी भी कहा जा सकता है।" राजू बोला। "परन्तु ब्लडी मेरी, सलाह यह सब क्या है, अब रानी"—इसी क्षण मि० माथुर का स्वर वर्कशाप में लगे लाउडस्पीकर से सुनाई दिया—

"राजू खाने का समय हो गया, हम दुकान बन्द कर रहे हैं"।

राजू ने वर्कशाप में लगे स्पीकर से मि० माथुर को उत्तर दिया कि वह तुरन्त आ रहा है और वह अपने साथियों से बोला "मुझे लगता है अब हमें आज का काम बन्द करना होगा, हरी क्या तुम कल आ सकते हो ?"

"मेरे ख्याल से नहीं, कल मुझे अपने घर में अपनी मां की काम में सहायता करनी है साथ ही मुझे रहस्य भी कुछ सुलझता दिखाई नहीं दे रहा!

"ठीक है ऐसे में हम ही तुम से बातचीत करते रहेंगें। तुम मि० जीटर का ध्यान रखना, तुम्हें याद है न, मि० जीटर ने कैसे घड़ी छीनने का प्रयास किया था। हो सकता है तुम्हारा और श्याम का पीछा भी उन्होंने ही किया हो और घड़ी चुरा ली हो" राजू ने उत्तर दिया।

"मैं उनका ध्यान रखूंगा, मुझे भी उन पर विश्वास नहीं है, वह कुछ गड़बड़ अवश्य करने वाला है"।

"इसी बीच हम तीनों—राजू बोला परन्तु एक बार फिर उसकी बात बीच ही में। रह गई क्योंकि टेलीफोन की घंटी बज उठी।

"तीन जासूस. राजू माथुर बोल रहा हूं" वह बोला "हैलो,, एक स्वर सुनाई दिया जिसे वह पहले पहिचान नही सका। मैं गोवर्धन सिंह बोल रहा हूं, तुम आज दोपहर को मेरे पास चंदू घंटे के भेजे हुए संदेश लेने आये थे"।

"जी हां श्रीमान् ?" राजू ने उत्त दिया।

(क्रमशः)

भूल सुधार

दीवाना के अंक ८ में पेन-फ्रेन्डस के पेज में फोटो और नाम अलग-अलग अंको के छप गये हैं। अब उन्हें ठीक तरह से अंक न०१० व ११ में छापा जा रहा है पाठक कृपया नोट कर लें।

—सं०

जाने-माने बबल्स जूते

★ हर अवसर व हर जरूरत के लिये असली बबल्स जूते बेहतरीन चमड़े व लचकदार रबड़ के तले से बनाये जाते हैं।
★ बबल्स जूते देखने में आकर्षक व चलने में आरामदेह एवं टिकाऊ होते हैं।
★ बच्चों एवं सभी उम्र के पुरुषों के लिये सभी साईजों व रंगों में उपलब्ध।
★ हर कसौटी पर खरे उतरने वाले।

सम्पूर्ण भारत में मुख्य-जूता विक्रेता एवं खेल सामग्री विक्रेताओं के यहां उपलब्ध।

BABALS SUNNY ENTERPRISES An Ex-Serviceman concern
D-133, OKHLA INDUSTRIAL AREA, PHASE-I NEW DELHI-110020
PHONE-637133

फैण्टम-जंगल शहर

© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights re

© 1980 King Features Syndicate Inc World rights reserved

वृक्षघर पर एक आकस्मिक स्वागत,

बात क्या है?

मुखियाओं की कौंसिल ने हमारे नये घर के विषय में सुना, वे सब गृह प्रवेश के लिये आये हैं, एक प्राचीन जंगल का रिवाज

आशा है वे भोजन के लिये रुकेंगे.

सब के सब ही रुकेंगे.

जंगल मुखियाओं और होनर रक्षक का नये वृक्षघर का एक आकस्मिक आगमन.

डियाना वे अपना भोजन साथ लाये हैं.

मैं सोच रही थी कि एक भुना मुर्गा ४०० मेहमानों के लिये कैसे।पूरा होगा.

© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserv

सारी रात नाचते गाते.

नमस्कार, नमस्कार, दुबारा फिर आना.
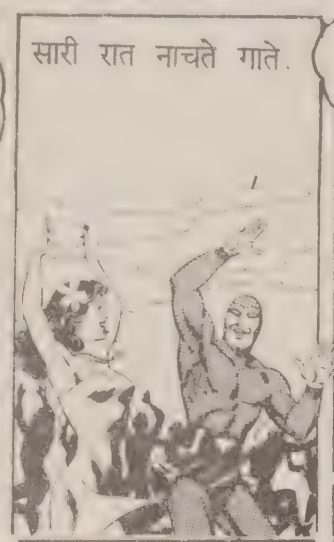
हां,कृपयाआइये अवश्य, पर इस बार पहले खबर दे कर

चित्र वर्ग पहेली १० रु इनाम

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें। दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

यूं तो फायर ब्रिगेड वाले कहीं भी आग लगी हो वहां पहुंच जाते हैं लेकिन एक जगह पर आग लगी और उन्होंने वहां जाना जरूरी नहीं समझा। बात ठीक भी थी क्योंकि आग एक . . . . . .पर लगी थी।
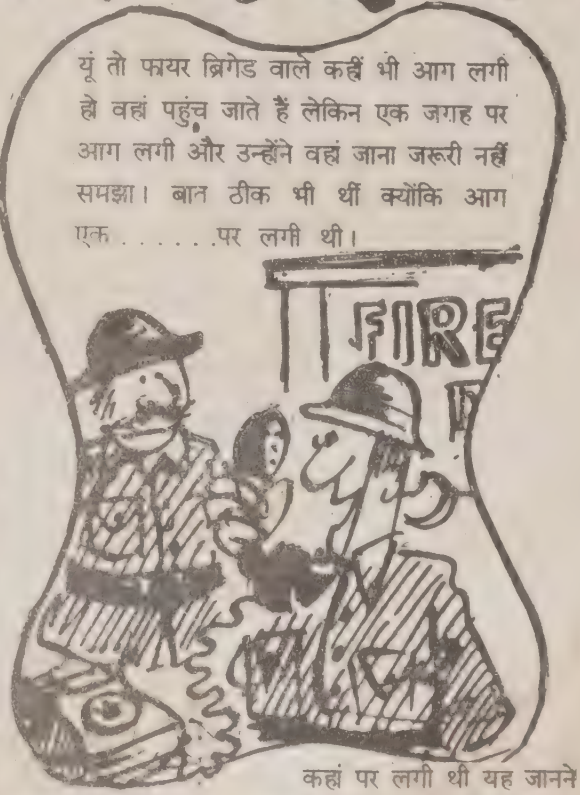
कहां पर लगी थी यह जानने के लिये पहेली हल करें।

12-6-1982

उत्तर

नाम

पता

पृष्ठ ६ से आगे

अनोखेलाल जी तो संदेह में पड़ी भीड़ को काफी पीछे छोड़ चुके थे, पर भीड़ में बहस और तेज हो गई. होते-होते बात यहां तक बढ़ गई कि लोग उनके बालों और उनको लेकर शर्त लगाने पर उतर आए. कुछ ही देर में वहां लोगों के बीच कई तरह की शर्तें मंजूर हो गई. एक बुजुर्ग बोले, "शर्तें तो आप लोगों ने खूब लगा दी. अब सच्चाई का पता भी तो लगना चाहिए."

"हां-हां, चलो. अनोखे लाल जी के घर चलकर सारी सच्चाई सामने खुल जाएगी." एक दूसरा बोला तो सारी भीड़ उनके घर को चल दी.

इधर अनोखे लाल जी ने घर पहुंचकर, अपने लड़के को आवाज दी," गणेश, दरवाजा खोलो. गणेश . . ."

पिता की आवाज सुनकर, गणेश ने ज्यों ही दरवाजा खोला, उनको अजीब सूरत में देखकर डर से बुरी तरह चिल्लाया, 'भ . . .भ . . .भूत . . .भूत . . ."

"अबे गोबर गणेश, हम भूत-प्रेत नहीं, तेरे बाप हैं श्री अनोखे लाल.' वो झुंझला कर बोले, "देख कितने खूबसूरत नजर आते हैं हम."

"ए बाबा-ढोंगी . . ." तब तक उनकी पत्नी अंदर से वहां आती हुई बोली. "भागो यहां से, यहां भीख नहीं मिलती. तुम्हारे जैसे भिखारी बहुरूपियों को मैं खूब जानती हूं. जाते हो कि अभी मारूं चार सोटे . . .?"

इतनी ही देर में घर का कुत्ता भी उन्हें देखकर कानफोड़ आवाज में उछल-उछल कर भौंकने लगा. घर के बाकी लोग भी तब तक वहां आ पहुंचे.

"चुप बे . . .तेरी दुम सीधी कर दूंगा और अकल भी . . ."

अनोखेलाल कुत्ते के ऊपर मारे झल्लाहट के दुगने जोर से गुर्राए. फिर पत्नी को समझाने लगे, "अरे प्यारी अक्लमंद, भूल गई मुझे? हम तो तुम्हारे वो है. . . . .?

"हे भगवान . . . .बेड़ा गर्क हो इस सत्यानाशी का आंख कान से कमजोर पत्नी जी कांपती हुई बोलीं, "अरे इस ठग को पकड़ो जल्दी..."

एक तो गई शाम का धुंधलका. दूसरे विचित्र चेहरा. उनको कोई पहचान ही न सका. उल्टे 'पकड़ लो-पकड़ लो' चिल्लाने लगे घर वाले.

इतने में ही आती हुई भीड़ भी वहां आ पहुंची उचक-उचक कर लोग उनको घूरने लगे. मानो कोई अजूबा हों.

"अबे इस तरह घूर क्यों रहे हो?" अनोखेलाल जी परेशान होकर बोले, "हम अनोखे लाल ही हैं. असल में अब हम जवान बन गए हैं.

"लेकिन ये बाल?" अचरज से लोगों ने पूछा

"अरे ये तो नकली हैं." अनोखे लाल जी ने भेद खोल ही दिया. "इनको लगवाने के लिए ही तो हम दिल्ली गए थे. कैसा मूर्ख बनाया सबको हमने, हा हा.."

उनको इस तरह कहते और हंसते देख, शर्त हारने वाले बुरी तरह झल्ला उठे. भीड़ में ही एक आदमी, जो उनकी असलियत पर लंबी शर्त हार गया था, इतनी तेज खिसियाया कि एक हाथ से तो उसने अपने बाल नोचने शुरू कर दिये. और दूसरे हाथ से अनोखेलाल जी के. उनके ठहरे नकली बाल. सो एक बार में ही उखड़ आए सारे, कुत्ता शायद पहले से ही ताक में था. विग देखते ही, झपटकर उसने उसका भुरकस निकाल दिया.

विग की दुर्दशा पर अनोखेलाल जी भांय-भांय कर रो उठे. साथ की कसम भी खाली कि आइंदा ऐसी भूल नहीं करेंगे. जो कुछ असली है वो ही ठीक है. ●
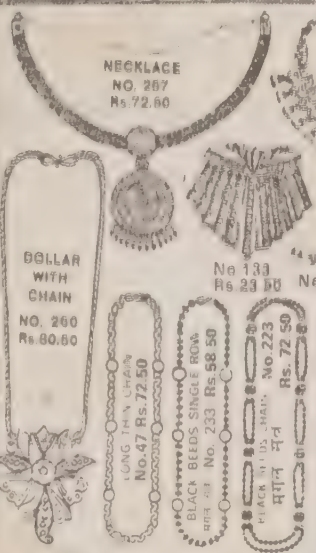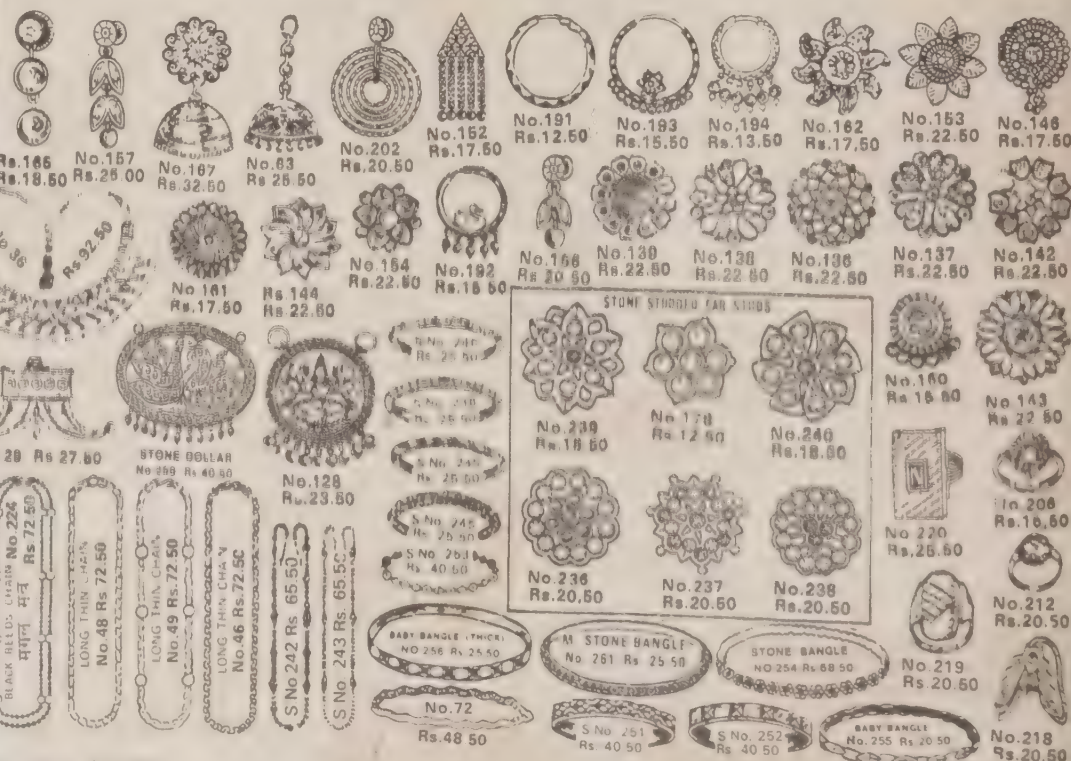
अंक ६ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का सही हल

खूबसूरत — मरणोपरात
गरीबनवाज — करतब
बारम्बार — जीवधारी
कनखजूरा

सही हल-रांग नवम्बर
(निर्णय लाटरी द्वारा)
विजेता सतीश कुमार गुप्ता
द्वारा मेसर्स रामबाबू राजेन्द्र प्रसाद
कटरा नवाब, चांदनी चौक, दिल्ली-६.

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगित नं० २४ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—मोनिका बग्गा-वजीरपुर दिल्ली.
द्वितीय पुरस्कार—सुधीर नामदेव पेणकर-बम्बई.
तृतीय पुरस्कार—राजा डोगरा-देहरादून.

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. शिवानी शर्मा-दिल्ली २. दीपक कुमार भुसारी-कामठी, ३. अनिल खरपूसे-जबलपुर ४. सुनीता जैन-बैंगलोर, ५. चन्दन शर्मा-बुरूपुर (वैस्ट बंगाल)

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. राजेन्द्र कुमार गुप्त-नागपुर, २. जसबीर सिंह-कानपुर, ३. अमीत रतन-बुरी (हि० प्र०), ४. सुरिन्दर कुमार मनोचा-लुधियाना, ५. त्रिलोक सिंह सैनी-अम्बाला शहर।

सर्टीफिकेट्स

१. अरुण नारंग-जालन्धर, २. अनिल गर्ग-भटिण्डा, ३. संजय वर्मा-कानपुर, ४ जसवन्त सिंह राणा-चण्डीगढ़, ५. कुमारी रंजना दरगन-सहारनपुर, ६. विमिश जैन-चण्डीगढ़, ७. अरविन्द कुमार जीवराज जैन-बम्बई, ८. मनीष-रूनिजा-इन्दौर, ९. तरनदीप नन्दा-दिल्ली, १०. मो० सलीम- कलकत्ता।

दीवाना के अंक ७ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

ना	री	मि	के	त	न
जु	■	च	क	म	क
क	ह	ला	■	न	■
मि	स	■	सु	ना	र
गा	र	जा	र	■	व
जं	त	■	सा	प	ड़

निर्णय लाटरी द्वारा
विजेता—सुदेश लखनपाल, लक्ष्मी निवास लाजपत नगर, होशियारपुर—१४६००१.

क्या आप डाक-टिकट संग्रह के इच्छुक हैं?
क्या आप विदेश में पत्र-मित्र चाहते हैं?
अगर हां, तो पूर्ण विवरण के लिये आज ही लिखें:-

Jaihind Pen-Friend's Club
Kedar Road,
Gauhati-781001

SUPER DELUXE
मिनी पाकेट प्रिन्टिंग प्रेस
भारत में प्रथम
अमेरिकन जानकारी से निर्मित पाकेट प्रिन्टिंग प्रेस द्वारा घर बैठे 15 मिनट में रबर स्टाम्प, लैटर पैड निमत्रण पत्र आदि स्वयं बनाएं।
मूल्य 22/- डाक खर्च 8/-
मुफ्त 500 साल का कलेण्डर
रायल ट्रेडिंग कम्पनी
67-A मुकर्जी पार्क, नई दिल्ली-18
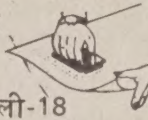
कद बढ़ाएं
IMPROVE HEIGHT upto 35 without EXCERCISE
Consult personally or send self-addressed stamped envelope for details to :
DR. BAGGA
LAL KUAN, (Opp. Kucha Pandit)
DELHI-110006. PHONE : 262426

दीवाना
तेज पाक्षिक

पैनल विज्ञापनों के रेट

पैनल साईज :	५ सैं. मी. × ५ सैं. मी.
२० पैनल तक :	७५ रुपये प्रति पैनल
२१ पैनल या अधिक :	६० रुपये प्रति पैनल १ वर्ष में
छपाई की सामग्री :	आर्टपुल/आर्ट वर्क
अन्तिम तिथि :	प्रकाशन तिथि से ३ सप्ताह पूर्व

अपनी सामग्री और सेवाओं की प्रसिद्धि के लिये दीवाना पैनल का प्रयोग कीजिये। जिसे २००,००० से अधिक व्यक्ति पढ़ते हैं।

पूर्ण विवरण के लिये निम्न पते पर सम्पर्क कीजिये :—

विज्ञापन व्यवस्थापक,
दीवाना तेज पाक्षिक, ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
टेलीफोन : २७३७३७, २७३६१७ टेलक्स-३१-४५३१ तेज इन

WEMBLEY

LOOK YEARS YOUNGER
Ask for free literature
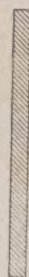
"GREY-TOUCH"® Hair Colouring Stick

A BOON FOR THOSE WHO CAN'T WITHSTAND HAIR DYES
WEMBLEY LABORATORIES
SINGH SABHA RD., DELHI-7

बोलने में अटकते हैं क्या
डा. सरतकर के
"अॅन्टी-स्टॅमर सेट"
(होम-ट्रीटमेंट) इस्तेमाल कीजिए
अधिक जानकारी के लिए
६० पैसे पोस्टेज के साथ लिखिए
रमाकान्त ब्रदर्स,
४८०, शनिवार पेठ, पूना-४११०३०

अरुण कुमार शर्मा ३३५/१४, ढिल्लन खां मिलक, पोस्ट मिलक राजेन्द्र कुमार खन्ना, केलकर पारा बलवीर सिंह, ५ नं. ब्लाक १२० नरेश चन्द्र माहेश्वरी, २ H.११३ नरेश माहेश्वरी ३०, कालांवाली सुनील मेहरो-
जैकम पुरा, न्यू रेलवे रोड, गुड़गांव, मौ-नसीराबाद, जिला राम पुर (उ० रायपुर (म. प्र.) १५ वर्ष, दोस्ती नं. प्लाट, त्रिलोक पुरी, दिल्ली- फरीदाबाद-१२१००१, २२ वर्ष, जिला सिरसा, १७ वर्ष, पत्र- चौक, लखनऊ
२० वर्ष पेन्टिंग बनाना। प्र०), २१ वर्ष, पत्र मित्रता। करना, माता-पिता की सेवा करना। ९१. १७ वर्ष, प्यार करना। पत्र मित्रता। मित्रता। पढ़ना।

आनन्द मोहन पाठक ११९/२६७ दर्शन पुरवा कानपुर-२०८०१२ (उ. प्र.) २१ वर्ष। मनोज कुमार सोनकर ७६/३४९ कुली बाजार, कानपुर (उ. प्र.) १६ वर्ष फिल्म देखना उपन्यास पढ़ना। गुप्ता द्वारा श्रीज्ञानचन्द अर्की. जिला सोलन (हि. प्र.) १७३२०८ १८ वर्ष। वरिंदर पाल सिंह. ६६ के. वी. गरिड कालोनी, मकान नं. ८-सी, पटियाला, १४ वर्ष, ओमी जैन, ओम पुस्तक भण्डार, गोपी नाथ बाजार, देहली कैन्ट-१०, २५ वर्ष, दीवाना पढ़ना। मनोज कुमार गर्ग द्वारा एस. एस. लाल, भूतपूर्व सदस्य नगर पालिका, के. लाईन सहारनपुर.१५ वर्ष। मोहम्मद श... तियान, मक... चौक, जय...

एस. के. सभापती ''एव्वरेस्ट'' १७/२३, दीनदयाल मार्ग, डोंबिवली (पश्चिम) ठाणे. २२ वर्ष। राज कुमार राजौरिया ''राजा'' गंगा सरन एण्ड सन्स प्रा. लि. विश्नुपुरी, अलीगढ़-२०२००१; १८ वर्ष। अशोक खण्डेलाल १७/२ मुराई मोहल्ला छावनी इन्दौर-४५१००१. १६ वर्ष, जासूसी कहानी लिखना। बालकुमार घ. जाधव उस्मान बिल्डिंग, बडनेर रोड, देवलाली कैम्प-४२२४०१. २२ वर्ष। अन्सारी मो. सलीम ४४७/देहली चकला, शैयद वाड़ा अहमदाबाद-२, १८ वर्ष दिनेश कुमार साहू, नया किला सिवान, १४ वर्ष, हर हफ्ते से दोस्ती करना। सुरेन्द्र अग्र... चिल्ली लाल अग्र... १५ वर्ष

शिव कुमार WZ १२९७ नांगल राय, नई दिल्ली-११००४६. २१ वर्ष, फिल्म देखना। धर्मवीर नारंग, एस. एल. हौजरी चौक, सैदा लुधियाना (पंजाब) १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना। संजय त्यागी गांव व डाक-कैली जिला मेरठ (उ.प्र.) १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना। मनोज कुमार द्वारा एम. पी. गुप्ता ई /३० बोर्ड कॉलनी शास्त्री नगर पटना, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता। समर्थ राजाराम दामने नया नकाशा नागपुर आंकेडकर मार्ग (महाराष्ट्र) १३ वर्ष गाने सुनना। देविन्द्र कुमार १२२९/१, माधोपुरी-१, गुरुनानक गली, लुधियाना, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता। शिव ला... (अ. प्र.) गिटार...

कुमार विनय साहू द्वारा बिहार इलेक्ट्रिकल स्टोर्स, मेन रोड झरिया, जिला धनबाद (बिहार)। प्रमोद रत्न वज्राचार्य, लगन टोल, काठमाण्डू (नेपाल) १८ वर्ष। संगीत सुनना, दीवाना पढ़ना, राजेश कुमार गुप्ता, ७२८ हीरा हलवाई चौक (लुधियाना), १६ वर्ष, टिकटें संग्रह। धर्मवीर अरोड़ा 'भारत' ६७४५ अरोड़ा भवन, रेवाड़ी (हरि०) १७ वर्ष, लेखन, डाक टिकट संग्रह। कृपाल सिंह यादव, प्रिय टाकीज मवाना, मेरठ (उ. प्र) २५०४०१ २८ वर्ष, पत्र-मित्रता, वेद प्रकाश अमित, ४४३, नजदीक सेन्ट्रल बैंक घौण्डा, दिल्ली-४३, १७ वर्ष, एक्सन फोटो खिंचना। सुनील... लाईं... तैराक...

विनोद चुग, सी. ३३८ जे जे. कालोनी, बजीर पुर-दिल्ली-११००५२. २३ वर्ष, पत्र-मित्रता। जियाउल इस्लाम द्वारा तय्यब, वी.सी. कम्पाउंड ए. एम. यू अलीगढ़-२०२००१. इमरान साकेत भूषण सिन्हा, २८०, कालेज रोड, फैजाबाद (उ. प्र.) २० वर्ष, क्रिकेट, शतरंज, मित्रता। सन्दीप अग्रवाल, ५७, स्ट्राण्डरोड, कलकत्ता-७००००६. १८ वर्ष, सिक्के जमा करना, चित्रकारी। गौतम नकर्मी बंगन् टोल, काठमाण्डू ४/४२० (नेपाल), १७ वर्ष, संगीत सुनना, गायक बनाना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर! अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ———————

पता ———————

चोबदार, शाही चीफ इंजीनियर को हमारे हुज़ूर में पेश करो। मैं उसके काम से खुश नहीं हूं।
तुमको राजा बुला रहा है। गुस्से में है। कह रहा था इंजीनियर कुछ नहीं करता। दिन भर आइस-क्रीम खाता रहता है।
अभी परसों ही तो उसके सिंहासन से एक कील बाहर निकल रही थी, उसे ठोक दिया था।
कई हफ्तों से मुझे तुमने अपनी साप्ताहिक रिपोर्ट भी नहीं दी।
प्रोग्रेस रिपोर्ट लिखी थी। लिख कर टेबल
थी, शाही हाथी आकर उसे खा गया।
समें मेरी क्या खता है ?
दूसरे राजाओं के इंजी
रहे हैं। तुमने अ
कभी-कभी म
इंजीनियरिंग
करना पड़ेगा वर्ना राजा मेरी छुट्टी कर
त में जो तनख्वाह मिल रही है उससे
पड़ेगा।
महाराज यह देखिये मेरी इंजीनियरिंग का जीता-जागता सबूत .....
आपने इतिहास में पढ़ा होगा कि जहांगीर ने भी ऐसी ही जंजीर अपने किले के बाहर लटका रखी थी। उसी जंजीर का कमाल है कि आज तक उसका नाम इतिहास में न्यायप्रिय सम्राट के नाम से जाना जाता है।
राजा को यह भी पता नहीं होगा कि इति किस चिड़िया का नाम है।
यादी आकर जंजीर खींचता, जहांगीर
घंटा बजता था, जहांगीर आकर
ना और न्याय करता था।
अच्छा कोई फरियादी आकर मेरी इस जंजीर को खींचेगा तो क्या मुझे भी आकर न्याय करना पड़ेगा ? मेरे महल में घंटा बजेगा ?
नहीं हजूर! अब जमाना बहुत तरक्की कर गया है। जब भी कोई फरियादी आकर इस जंजीर को खींचेगा.......
आपके महल के शाही फ्लश में पानी आयेगा। आप बाथ रूम जा सकेंगे।
फरियादी का क्या होगा ? मै समझा नहीं.
वह बैठा अपने बाल नोचता रहेगा। फरियादें सुन कर आपको पता लगेगा कि जनता को आपसे कितनी शिकायतें हैं तो आपको दस्त लगा जायेंगे इसीलिये मैंने यह प्रबन्ध किया है।

egd. No. D(DN)-275

काशन की अनुपम भेंट

में पहली बार

'' सन मैगजीन '' में धारावाहिक प्रकाशि

ली

आक्सा

कुमार सा
जार,कानपुर
म देखना

। अब रंगों से भरपूर हिन्दी व अंग्रेजी

पाठ्य पुस्तक के रूप
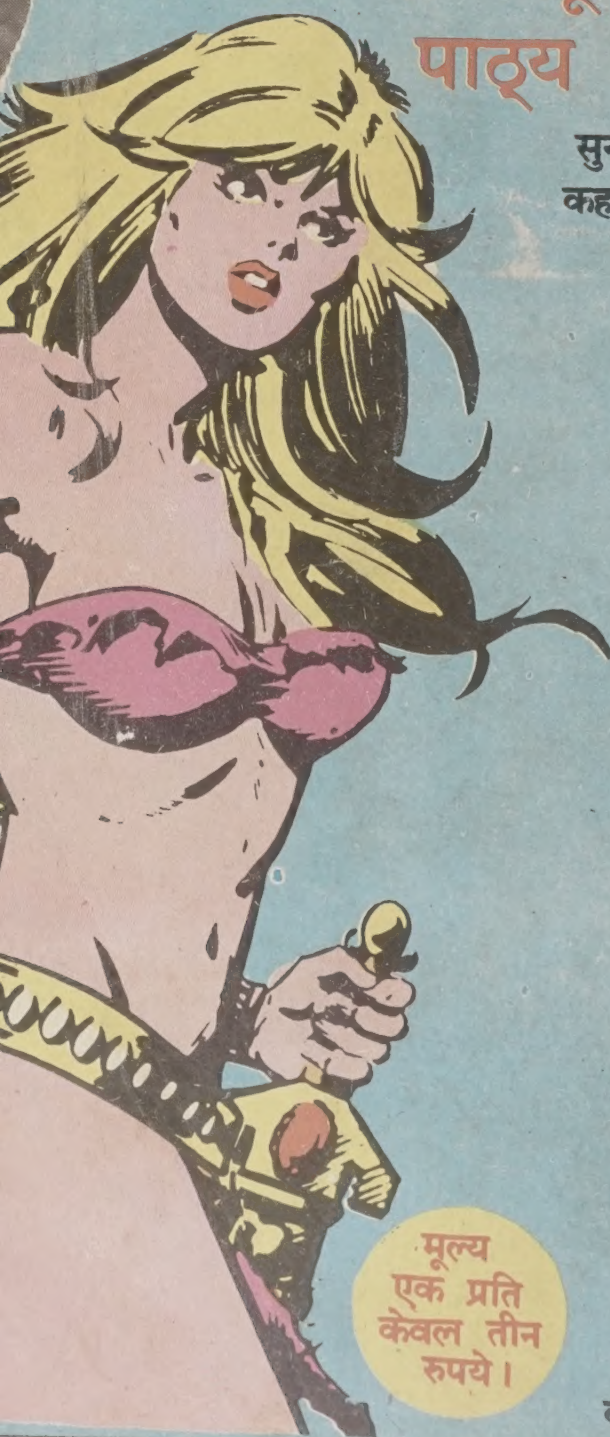
सुन्दर फुर्तीली, साहसी लड़की आक्सा
कहानी प्रतिक्षण एक नये उत्साह से भर
आक्सा शक्तिशाली
व्यक्तियों, अजीबो-गरीब जीवों
चालबाजी और विनाश की योजन
से लड़ती

आक्सा कॉमिक जो सन मैगजीन
लाखों पाठकों का पिछले चार वर्ष
मनोरंजन करती आ रही है। अ
भारत में केवल सन मैगजीन में
पढ़ी जा सकती है अब पाठकों
सुविधा के लिये कॉमि
(पाठ्य-पुस्तक) के रूप में हिन्दी अ
अंग्रेजी में प्रकाशित की जा रही
इस धारावाहिक कहानी की एक
कहानी इस रंगीन पुस्तक में दी
है। इसको अपने निकटतम पुस्त
विक्रेता से मांगिये

आक्सा कॉमिक अपने बच्चों के लि
खरीदिये और स्वयं भी उसका म
उठाइ

अपने पुस्तक विक्रेता से हिन्दी
अंग्रेजी में सन कॉमिक की आक्स
की प्रति सुरक्षित कराइये।

मूल्य
एक प्रति
केवल तीन
रुपये।